

DPN 5811

Title: दशबल स्तव स्तोत्र व मेमेगु स्तोत्र

DAŚABALA STAVA STOTRA VA MEMEGU STOTRA

Run. No. 6502

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21.5 x 13

Folios 70

Lines (in a page) 9/10

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor दानविर सिंह / प्रतापमान शाक्य

Date: NS / SS / VS / KS 1034

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0 cms.

5

10

15

20

गुण ४ सरू / यत्तायमान ४ मत्ता
यास्व दूनिंगु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो वृधाय गुनवंतमधर्मायः नानुलीनमः संधायः सहस्र
मः यदवा संधिमन् वनकनकमयः मंदिलः यवनर्जा पाताज
यहर्जगः फलिमलिकिनना ध्वस्तसर्वधकानाः केनास्य स्तुति
नास्य प्रमदित हृदया यचविद्या यनदा स्तुमा ऊं दानरुगा
मृतिवलवचनं ॥ १ ॥ अगु मार्याति सर्वं ज्ञायाना अगु कामा अ
सूत्रसुवगः सिद्धिर्गंधर्वनामा यजीदा कृताशु किं न जडाग
नूत हविहना अकवक्रादिदवा पूजार्थं वा यचाने निरुवस
नमिर्तं मदतिद्वलशायं ॥ २ ॥ त्वं गुण्यहं वाचयामि प्रसन्नित सि
जसा त्वं महायानसूतं नमो वृधाय नमो धर्माय नमो संधायः

ॐ नमो वृधाय ॥ १ ॥

ॐ नमो वृधाय गुनमयिसूनसंधेः सिद्धिर्गंधर्वजः दिविरु
विसविचिणे स्तुगुवागिर्यका ॥ १ ॥ अहमधिकृतसक्तिः नो मि
संवृधमार्यः तरुसिव गनुयानिः किं नयाति द्विनर १
कृपितइनिगपक जीनक्षी सखदाया ॥ २ ॥ दिविरकनकवर्धः स्तु
लवक्रायनाक ॥ ३ ॥ नचिनयनिवंधः अष्टरामधुलस्मी दयाव
लनवनित्यः सप्रगर्गप्रगर्ग ॥ २ ॥ मदनवलपिजतु काप
थक दकं ॥ ३ ॥ निरुवनहितकस्तु स्तिलगांजालहेतु समगुख
फलदातु रंजुलहा नसील दशवल ॥ ३ ॥ असूनसुवग
नाता ॥ यागजसागुहडा सकलरुवधना ॥ ४ ॥ लाकगुष्टि का

भावः ॥ अपितमनःकुधना ॥ अऊयानि ॥ धर्यरु ॥ दधवल ॥ ४ ॥
 उदयगिनिनटस्क ॥ विंदुमाऊ दनामु ॥ सिमिनसिकलहना ॥ चरु
 नकप्रजाना ॥ नविपनिमदलील ॥ सर्वथासायिसूफ ॥ दधवल
 ॥ ५ ॥ दिलदलसनयाइ ॥ भीतनस्मी ॥ धर्माक ॥ सिनक ॥ वन
 ऊन्याः ॥ सर्वकृजामधीय ॥ अविगतमदनाग ॥ सर्वथासायिसूफा
 ॥ दधवल ॥ ६ ॥ परलरुऊचरुका ॥ धादधर्माधवका ॥ ऊप
 न्मियमविधिहः ॥ सामवदप्रवका ॥ असलकमलयानि ॥ सायिव
 काप्रसूफा ॥ दधवल ॥ ७ ॥ हिमगिनिमिषलीरु ॥ सर्वऊरु
 पविदि ॥ सिधुनसहनदऊ ॥ व्याघ्रचर्मरुनीय ॥ अहगिनिअलपू

सायिसूफा ॥ सिधली ॥ दधवल ॥ ८ ॥ जालिनकुलिसपासि
 इऊयादानवाना ॥ सनपनिलयिसैचा ॥ विजुममधर्विना ॥ अ
 निरानिसिप्रसूफा ॥ कामयंका ॥ विमरुता ॥ दधवल ॥ ९
 कुवललयदलनील ॥ पुधुनीकायनाऊ ॥ अनविप्रवलहना ॥ वि
 धकृति ॥ धनयि ॥ हनिलयिचिलसूफा ॥ गर्हवासनमका ॥ दध
 वल ॥ १० ॥ जालिनऊतकलागा ॥ नकयानावूनाऊ ॥ पसूयनि
 नयिकाल ॥ संगरुंगकदऊः ॥ समनस ॥ जालिताग ॥ सायिसूफा
 हुनीसा ॥ दधवल ॥ ११ ॥ हिमधर्माकृमदोरु ॥ मधयाना
 नूधका ॥ इधकथिनरुजांग ॥ लीगुलिसकिहसा ॥ वलरुह

सङ्गसो लवती कथलरुन ॥ दहावल ॥ १२ ॥ गऊ मूरव
 दहा नैकः सर्वता वि घुहता ॥ अविगत मदवालि षड्पदा की
 रुगैद गहायनि नयिषु फा वानुशीपानमसु ॥ दहावल ॥
 १३ ॥ मूतसिकुमुमनीलः यऊसकि कनांग नवनविनवय
 प्मा घनमूरवाका चहता ॥ गिनयनननयानि सापिसफी
 कुमालो ॥ दहावल ॥ १४ ॥ असनवसनहीना निगया
 गा नयाका ॥ वहुविविधविधाता प्रतवग्नाददहा उरु
 यगानिनिहीना गपिताना पसफी दहावल ॥ १५
 निषय ॥ हमहा न्या रसविशगिनाया कटकुटहमसि

शा व्यासवामिकडांग ॥ उडा निडा गहासगांऊ माहिताग
 पिसफी ॥ दहावल ॥ १६ ॥ जमवनूक्षकुवेल यऊदे ग्याः
 नरगैडा ॥ दिविगवि गगलवा लाकपाला गथान युवनि
 मदकगाऊ निवितासु पिसफी ॥ दहावल ॥ १७ ॥ हवऊ
 लनिधिमरुता ॥ माहकाला हतांग ॥ मूतिकपिलकनाया
 शास्मितामू धचिंता ॥ समसरवरुलहिना वानिदांग पिस
 फी ॥ दहावल ॥ १८ ॥ अहाननी दनऊनी नमसी पस
 फी हफु विसालसयन विषयाप्रधान कालिगु शा गु
 हरुल पानिवरुमाने ॥ जागीरिये अतनमवलनमा गु

[illegible]

二五五二

विकिरणः महापुस्कन विमलनिलसूतं जिह्वं नलिनिकुमुदल-
 सर्गधकाल दिव्यकुसुमसूत्रं हि ॥ ४ ॥ सकनयनमास-
 सहस्रदल नलमय युतिनाजिह्वं हि वंध्यकं धन विचित्रनाल-
 स्वयंरुचं निवासिह्वं ॥ ५ ॥ धवलवपुनय कनूयणसन वि-
 साललाचनसंदनं रं चयुनमनूति नीलपीत नकुपुद्गादसं ह-
 लितं ॥ ६ ॥ नानाकुसुमवर्धसाहितं रुलनं विकस्रं हि ॥ ७ ॥
 रं चतुर्चपक नागकंधन घक्रताल मनाहनं ॥ ८ ॥ नागगोध-
 रं यक्रदिननं गनूत मुनिरिह्ववासिह्वं रं पूष्यरुमो माक्रवां हि-
 त विविधिउपहानं धाविह्वं ॥ ९ ॥ धर्ममेतौ ननु सवित मेश

दवतमागर्तं रं द्वादशकुन वाधनार्थं धर्मधनुवागीध्वनं
 सांतिकानध साधनार्थं यंचयुनिनिवासिह्वं रं महामाविनिजुता-
 वृष्टि इरिह्वधानपुष्पार्थिकं ॥ १० ॥ अयुनामानि वेतनाग मसि-
 लीग एतकर्थकं चानूगिनिवन कुरुतीर्थ एतिनगंधवनिविक-
 मं ॥ ११ ॥ पूर्वदिगंदिश दवतार्थ हनहासमद्रव वागमनि वि-
 जितनाथानि विनामधि नदिराजिह्वं ॥ १२ ॥ कंधासमयुनिक्रम-
 पन कंधावनि नदिसीगमं ॥ १३ ॥ अरुलवलप्रद पूष्यवागीध्वन गुफलो-
 मपुक्रुह्वं ॥ १४ ॥ अरुलवलप्रद पूष्यवागीध्वन गुफलो-
 लदनं लकिननऊल अरिह्वरुलदं माक्रसखावनि पाप्रया ॥

॥ अग्निदेवता ॥ ३

॥ १४ ॥ अग्निदेवता गुणसमाय ॥ ॐ ॥ अं नमो वधाय ॥ अतसि कु
समर्थका सदहा ॥ पूर्वमुख दिलदा सन ॥ इव न दान न विघ्न ना ऊ
नमामि श्री अकार्य मन्त्रि ॥ ॐ ॥ सर्गंतु मनस महाना ॥ १
॥ वलन कृत न न लोक सी ॥ भाऊ वांछित मात सी ॥ स्वामि च न स न
ल श्री ॥ २ ॥ दक्षिण मुख श्री नल सी रु व ॥ विरु व सी य द दाय क ॥ ३
दिन सवर्ष का सदहा ॥ नमामि तु न ग वाहन ॥ ३ ॥ नव उदित न
विकिन दहा ॥ याग मन्त्रि धनि ना ॥ मयू न वाहन संक्षि न ॥ नमा
मि श्री अग्नि नाहन ॥ ४ ॥ सफरु धि म धि आल कृता ॥ हवि न वरु
विनाजि ना ॥ उरु न मुख श्री अमा घ सिद्धि ॥ नमामि श्री ग न उवाह



॥ पुनः दिगं यति ॥

न ॥ १ ॥ इंदु कु म द वि का य दहा ॥ विदहा रु व प नि पा लि ना ॥ सिंह वा
हन ध्म न मन्त्रि ॥ नमामि श्री वे ना च न ॥ ३ ॥ गगन विंद कु मा न व
दन ॥ वरु ला श्री न पा लि ना ॥ गीत कं थि न ॥ कसू म मा ला ॥ नमामि श्री
धर्म धा रु स न सी ॥ १ ॥ अग्नि श्री धर्म धा रु गीत समाय ॥ ॐ
अं नमो ला क पा ला य ॥ पूर्व दि गं य ति ॥ इंदु ला क पा ल ॥ पीत व र्ष स
सा रि ना ॥ १ ॥ रुक्मि वाहन वज्र हस्त ॥ नमामि श्री स न ग नाथ ॥ ॐ ॥
सम न स म न स जा क पा ल ॥ १ ॥ अग्नि दि गं य ति ॥ अग्नि दे व ना
न रु व र्ष स सा रि ना ॥ छा ग वाहन सा कि हस्त ॥ नमामि श्री ह्म ना स
न ॥ २ ॥ दक्षिण दि गं य ति ॥ धर्म नाऊ ॥ नील व र्ष स सा रि ना ॥ महि

四

॥ कामनिर्वहण ॥ ५

विनिर्वि॥ ३ ॥ ^सस्वतर्वर्धकनृषामयंदा॥ अष्टनागचर्मविष्
 नहसं॥ वासकिनागतपञ्चसमूर्ति॥ विनिर्वि॥ ४ ॥ अनेन ना
 गसुदवशनागगन्धनागयश्चकुरुसनाग॥ वृत्तसुनागनवा
 मकमलने॥ विनिर्वि॥ ५ ॥ सूर्वर्धनंदिवचानृषलायधीति
 सनासनवंदविहान॥ मरुदकपुनमघउद॥ विनिर्वि॥ ६
 ॥ ^ॐनिशीजार्थावलाकिरुधनस्य अनेन नागनाजासुवस्तीरु
 समाप्तं॥ ७ ॥ ^ॐनमावृधाय॥ मधुगंतविजयंश्रीः वेनाच
 नजिनवलनं॥ ८ ॥ सहमासनस्तिरुस्वतर्वर्धकनृषामयंदा॥ अष्टनागचर्मविष्
 नहसं॥ वासकिनागतपञ्चसमूर्ति॥ विनिर्वि॥ ९ ॥ पूर्वदीगंतवीजयंश्रीः अक्रायजिनवननी

॥ मधुगंत ॥

रंगजमासनस्तिरुनीलवर्धक॥ २ ॥ दक्षिणदीगंतविजयंश्रीः
 नत्वसंरुवजिनवननं॥ ३ ॥ गुणमासनस्तिरुपीतवर्धक॥ ४
 पश्चिमदीगंतवीजयंश्रीः॥ अमितांतवजिनवननं॥ ५ ॥ मयनमा
 सनस्तिरुनक्तवर्धक॥ ६ ॥ उरुनदीगंतविजयंश्रीः॥ अमाघ
 सिद्धिजिनवननं॥ ७ ॥ गनुमासनस्तिरुव्यामवर्धक॥ ८ ॥ ह
 गीहनवृक्षायकनागजसुनासनवह्रुविविधिउपहान
 पूष्याग्राहनी॥ ९ ॥ ^ॐनिपंतवृद्धगीर्णसमाप्तं॥ १० ॥ ^ॐनमावृधाय॥ नकागानमिदेवेव नरुधानाविनृयवानु॥ न
 ससातननिर्वि॥ नकागंतनसर्वेक॥ ११ ॥ माहर्ध्वसकयानि

॥ नकागान ॥

१० कौशिक नो ॥

॥ विष्णुविद्म ॥

३ विद्युत्तयः कृतनिजसुखः ललितः न स न हः

नारुधनसः सकलनिर्जनः स्वता न सः विपूलकमलनिर्जनः
कनासनः समनसासनः ॥ १ ॥ गान्मुखकन चंद्रहासनवर्ज संगि
नकनतिनासनः ॥ २ ॥ पाणिनिमित्तसुंदकसासग चाय ॥ ३ ॥
हितपाणिननयूग ॥ नक चंदन कन ॥ चंचन सऊन नैजन हः
॥ ४ ॥ नक सुमसूतान विनमद ॥ ५ ॥ कन नूवन वासन सन ॥ था
गतिर्जित विविध मनिवन लक सुखकन हः ३ ॥ वामदहि
न लकूटिका नति विविध नतिन स लावका निधि सैग नैग सुध
सवानिधि न नृषि नृष समान हः ॥ नयन विमन स नैज सुंदन
धृति विनिर्दि न ललित मधुल ॥ कामिनिजन मानहानक वि

घुसनक हः ॥ ४ ॥ विविध वृद्धि सिद्धि दायक सुधजन मध
वृद्धि दायक ॥ सार्य ललित विलाकि न नवन महंदन स्व न हः
वृद्ध नूद ह नैद धनपति नृष नर्जित सकल ननयति हानय
निहत तावका नति विवृध समन हः ॥ ५ ॥ गून् समर्वन लाव
लावित चन स रुग ऊल लवन या विन ॥ वेलि वन नृष समन घा
नित नापयापित हः ॥ वसु ना विवृचि मिमिल दान स सर्वजन व
न नयनका न स ॥ दिदय वेद विचान धन स निगुध चान स हः ॥
॥ १ ॥ रुवन ॥ विविना गपान स इष्ट हिति स न कृत विलापनः ॥
वृद्ध विष्णु मह स लावन कलि विघातन हः ॥ दिद स दन न वप न

१॥ सनजननसंस्तुतिजनितहलन॥ वक्रिसयतिठकिविहृन
 नसिद्धिदवनह॥ १॥ वक्रखजसूहृदकानकतिविनचैदस
 धसुवाहक॥ गगधमधुलनगननायकपंचसायकह॥ पव
 नगमननिनाधसाधककथितनिखिलनिनकवाहक॥ काल
 नयसजीवहात्रकविघ्नदानकह॥ ८॥ थागपनिविनिविजि
 नननियमि॥ हागसंगतियूवनिवृत्तनति॥ २॥ हानदानसदृष्टज
 नितटिदीनजनगतिह॥ २॥ मूकनसूत्रलति॥ मोलिमधुलगधुम
 धिगविमलकूडल॥ विपूलरुजवलविजितरुतनकर्मनिर्मल
 ह॥ ९॥ कविंदमज्ञपनायननयति॥ सकलगधचयशुद्धसं

११॥

मति॥ ललितमत्स्यमहिंदवर्धनमृद्धिवर्धनह॥ २॥ वहनिहितम
 तिचिरुचीतिनः॥ मूसुनिगसूत्रकसमूहकंहित॥ ममितनतिस
 गरावसचिग॥ ममलसंमिहह॥ १०॥ ॐतिथीकविंदमज्ञ
 यप्रगापदवविनचिनेगिगनात्मकशी॥ २॥ मदाय्यावलाकिगस्व
 नरुवनाजसमापं॥ ३॥ ॐनमः॥ श्रीस्वयंरुत्रमहस्वनाय॥
 मरुशीकननंम्यपर्वन॥ निदिवदर्यशुदायक॥ सत्यसंरुकयू
 गवलखसूयप्रपूर्वगिनिंदक॥ विमलशुनायानदवकु॥ व
 जक्रुकमहर्ग॥ दायप्रवसूदायककलिदावक॥ गभृगक॥ १॥
 ललितनामसिलंकन॥ कीलकनिरुग॥ गभृक॥ यवसिद्धि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १०

निधानकानन. मंदतादपिसंदर्भ॥ वकुलकुलवक कोकनदवक
 चंपकादिरिण्महिर्ग॥ कासकंठकिपागलागु न नागकंठ न वासि
 र्ग॥ २ ॥ यथिमा लनि कंदकुकुम. मधून मधुक विकसिर्ग॥ स
 ल्लिकासिर्ग. कमलदामन पालिजात समाकूल॥ विविधरंगे न
 रुमिनतमानुर्ग॥ कींचसकधनि पुनिर्ग॥ सकनंदपानविमृग्धम
 धूकन. गुंजिर्गद्रुममंदिर्ग॥ ३ ॥ लकुचगालपलासकिशुक क
 धिकानविरुधिर्ग॥ सनससा नलसानके नव नगनसर्जक रवे
 दिनमिषिषसाहिर्ग॥ दलिन जादिम पनसनामय वीजयूनक
 पुनिर्ग॥ ४ ॥ कदलिवदलिजै वरवंशुल दाऊयाधिचस्वहिर्ग॥

३ नवचैदन नाजिर्ग अमनगुंजुन ४३

तानिकनकपिस्फुषी रुल. जीनिकादिनावर्ग॥ विल्ववोनकनं
 वर्धवूनमदन कृतिनायिन जीववेधूकदीनर्गिंदुनकिर्गिनि
 तयनापिर्ग॥ ५ ॥ गगनलसनाऊगा रुविधर्मधसमद्रुवै॥
 मकहमनिंदुवैदिन मंगुमाद्यषदऊन॥ चंडकाटि सृणीतनदि
 तिसूर्यकाटि समप्रती॥ तैनमामिषनात्यने पनस्वयैरधर्म
 मयैविरै॥ ६ ॥ स्फुल्लभाधम विडनइनकस्वर्धदीर्घविधाय
 कै॥ यऊनऊसुनंदुदानवसिद्धिसाध्वससविर्ग॥ कर्हिका न
 क्षपायमंगललपिर्नऊनयालिर्ग॥ तैनमामिष॥ ७ ॥
 कर्मवेधनपायनाशन कर्मवेधनकानक्षे॥ नृप्यनृपकराव

२५
 २०
 १५
 १०
 ५
 ०

लवकलिफत्रयकवर्जितं॥विष्णुद्वयनिन्यनिकलसर्वकानक्षका
 नक्ष॥नैनमामिष॥८॥मंजुयुक्तमंजुमंजितपूजयुक्तकवर्जितं
 तंजुयुक्तमंजुमंजितपूजयुक्तकानक्ष॥सखिनष्टिबुद्धिका
 नक्षजाननादिककानक्ष॥नैनमामिष॥९॥धामन्यप्रसिद्धम
 ककहकजन्मनिवानिक॥गत्वमाययसिद्धिनिगमीमासालस
 वर्जितं॥दहन्त्यसदहदहजदहदहनिवासितं॥नैनमामिष॥१०॥१३॥
 लाहमाहप्रमूखवर्जितं॥लाहमाहनकानक्ष॥हानकानक्षकान
 नात्मकनादविंशिविंशितं॥वर्धवर्जितवर्धवर्धितवर्धरा
 यनिनामय॥नैनमामिष॥११॥शिशुसमूहवर्जितगुर्य

१०
 ५
 ०

मार्यममंजुकं॥शिशुसकानक्षकाननीतकमायिनंगतमायितं॥
 आदिमध्वमकांतवर्जितभाऊकानक्षनीर्मलं॥नैनमामिष॥१२॥
 नागलीगिमसंगवर्जितं॥लंगिमादिकवर्जितं॥यागलीगिमसंग
 कायनं॥लंगिमादिककानक्ष॥हंसवाहनपाकसासनयंनगस
 नरावितं॥नैनमामिष॥१३॥रुमिजीव॥आययासनगंध
 वाहनवर्जितं॥आमवर्जितसर्वकानक्षन्यन्यविवर्जितं॥रुकि
 मुकिदक्षकानक्षनामधामविनिर्गतं॥नैनमामिष॥१४॥
 षट्कदर्शनतकरुकि॥मूर्तिवकानक्षकानना॥अष्टिनाष्टिप्रमूख
 वचने॥अष्टिनाष्टिप्रमूखनिष्ठनिष्ठसर्वगसंविदान

मयंविहं॥नैनमामि॥ १५॥सेवलोभगतकवेष्टव सोनद
 र्जनकात्रक्षं सर्वकानक्षकाननीतक कानक्षत्मकनृपिन॥वृद्ध
 सेधवयावनी गकवालकादिक सैरुव॥नैनमामि॥ १६॥
 नपालपालपनायमल विनिर्मित॥किलमरुंस्त्रीमूलममकन
 रुधसैयुत॥गृधवर्धमंविबिधसिद्धिनिधानराजनमूलमैसरव
 दायक॥कमाहवितासकानक्षमकमृकिप्रदक्षिव॥ १७॥
 नरुसिनासिविधाययांजलिमूलमै गविनांगकपथनियदिरु
 विमानवःपनिवासनैरुलदायक॥विरुनययःप्रदायकस्वर्ग
 सोरव्यसपुनर्द काकाकृष्टरुगादनायपिपमूरव व्याधिदावानल॥

॥१४॥

॥१८॥नपालसंमतस्मिखमनिगीनियुत आवनशुक्रपुंशुक्र
 वाने पुनियदिव्यनिपादयाग सूर्यस्थ॥अप्लवायांधर्मधातु
 पनियलविमल पीनिकामव्ययलात्मलथासपनायकिनियमि
 गिलकेनिमित्तकुागनाज॥ १९॥
 रूपनिचिर्नशी३ध्वयोरुहानककुागसमाप॥ २०॥
 धाय॥दानिदुर्धकममर्त सैसानाख्यमहादक्षु॥पनिहाला म
 नूस्मृत॥गहिमाहिनथागत॥ १॥
 दुःखवदिनं वंधूवर्गपनिनंक॥गहिमाहि॥ २॥
 रुहगिन्यादिपुनदानाःसुहजना ॥दुजालामयादृष्टा॥गहि

॥दानिदुर्धक॥१९

माहि ३ ॥ जन्मपापनिर्जनार्थं सकृन् कर्मइच्छन् ॥ यकाकि न
 नयस्यामि ॥ जाहिमाहि ४ ॥ जीर्णं कृषमहाघातं जूनवगुहे
 सागत्र ॥ अंधरुणा म्यहंताथ ॥ जाहिमाहि ५ ॥ जिह्वा नोका स
 मानूषा महासागत्र लंघन ॥ इलघांच मया दृष्ट ॥ जाहिमाहि ६
 धर्माधर्मनविहर्ता गम्यागम्य नवदिनं जूचते नो सम्यहंताथ ॥ १५ ॥
 जाहिमाहि ७ ॥ मारुघाणादिकं यंचानं नर्यंचामया कृते ॥ यंचा
 मिन्नकंधान ॥ जाहिमाहि ८ ॥ कृतं मया सुयुद्धं सांघिका ॥
 विनासिने ॥ कृतं मया सत्वे हिंसा ॥ जाहिमाहि ९ ॥ ब्रह्मलोकस
 स्वाहितं पत्रलोकनवदिनं ॥ वष्टितं कर्मसु न ॥ जाहिमाहि १० ॥

काशीपूजयथाकाशजमननायुवाहनं ॥ ब्रह्मजीविनं लोक ॥ जा
 हिमाहि ११ ॥ जूचिकेयकाकं नावहृवृक्षसमाकुला ॥ यथार्थना
 नयस्यामि ॥ जाहिमाहि १२ ॥ जूनायनाधकृषितं नरुणाका
 मृगमया ॥ जाहाहं शातदामन ॥ जाहिमाहि १३ ॥ ननकेयच
 मानस्य कश्चिंशा नारुविष्यति ॥ गच्छामि नस्य सनक्ष ॥ जाहिमाहि
 १४ ॥ वेद्यानां वेद्यनाजस्तुं सर्वव्याधिविकित्सक ॥ लोकनाथ
 रुवशा नालेला कं नचवाचन ॥ १५ ॥ ननिन्नकाधनमुग
 समाप ॥ १६ ॥ उतमालोकनीय ॥ रुवनं नयवंदितलोक
 गुरु ॥ जूमनाधियति सुनिबुद्धवनं ॥ मनिनाजवनामनिनाज

॥ रुवनं नय ॥ १७

वल्लभसिद्धिकर्तृपुष्पामिवलाकिताथकर्त॥१॥सुगत
 लज्जनूपसुनयधनंवरुलजनरुखितदहधनं॥जुमितीरुत
 थागतमोलिधनं॥कनकाजलिरुषितपासकर्त॥२॥कु
 तिमलपिंगलधर्मकर्त॥शक्तिविम्बसमूहलयूर्ध्वमुखं॥क
 मलायतलोचनचानुवनं॥हिमखंदविषदलगुधकूटं॥३॥
 अधलंजितपंकजाहिसमं॥सनदं वृजगर्जितमधनंदं॥वरु
 नजनरुषितवारुयुगं॥गनूकामलसाहजनयानितलं॥४॥
 मृगचर्मनिवस्त्रितवामनं॥शुरुकुंदलमंदितलालधनं॥क
 मलादकामलनाहिसमं॥मनिमंदितमर्षरुमवनं॥५॥

कतिवस्त्रितचिनुसुवस्तुधनं॥जिनग्यानमहादयपात्रगतिं॥
 वरुयूंश्चमूयार्जितनफधितिं॥जालव्याधिरुत्रंवरुसौख्यकर्त॥
 ॥६॥शुरुसांगिकर्तृशिरुवास्तुकर्त॥सत्तनंस्वचनंशक्तिदहध
 नं॥विविधमकुलनिर्जितमात्रवनं॥दसपात्रमितायनमार्थक
 र्त॥१॥चतुर्वक्त्रविहानगवदकर्त॥तथताक्षयज्ञानविवाधक
 र्त॥मनिनोयुत्रगर्जितपादयुगं॥जगमस्तुविलवितहंसगतिं॥
 ॥८॥पत्रिपूर्वमहामृतनफधितिं॥किचादलनानवनिष्ठागतिं॥
 थापातनकादिहिवासनं॥कनूष्णमयनिर्मलचलुदधं॥९॥
 वृत्तिश्रीआर्यावलाकिताथवनचंद्रकालाहिविनचितनार्थसमापं॥

ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ उहिर्मंथी वाधिर्मंदिरं पूर्णपुनदिपूनुषी २ सत्त्व
 सहस्रकाटिधरु बधिकानयकं पिर्ग ॥ ३ ॥ श्री सावकसिंहप्रभ
 म्यनाथः पूष्यकायगुह्यदधिः ॥ दानशीलकृमाप्रसाधनवी
 र्यध्यानसमागर्ग ॥ २ ॥ लाहमोहविषयकामनागद्वयवि
 नासनं ॥ पूष्यप्रसावलनवर्जितं सर्वसत्त्वहितं कर्तुं ॥ ३ ॥ ॥ ११ ॥
 देवमानवः ऊऊर्वीदितं गनूऊकिं नमो हानगी ॥ देवमानवः अ
 सूनीर्यकः प्रगननकसूजानिकं ॥ ४ ॥ वक्रध्वनं कपिल
 धारं सत्त्वही नसूजानिकं ॥ गोधर्वदानवः असूनीवासकि ॥ रुमि
 सिलंधनवीदितं ॥ ५ ॥ दार्ष्टिकं पूनुषलकृधः असूनि विऊ

नलीकृते ॥ सिंहकायगुवाहयूकैः धर्मकायमहावलैः ॥ ७ ॥ धर्व
 नगं यनालिधानितवसुदानसूचीवर्गः नलकृलमकृटकंथि
 नः मकृटपादसूसाहितं ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिकं वत्तनः मनु
 काटिसूजानिकं ॥ गायत्रिंशतिकाटियायं मालरोगविध्वंसनं
 ॥ ८ ॥ मालजंगनरूपशुद्धिनिः कामधारुविभाहितं ॥ ऊष्व
 ऊनि वजनश्रुत्वा वृद्धनयकृत्पकं ॥ ९ ॥ कनककनूनविला
 ययूकः मधुवालज्जानिकं ॥ कनसूवर्जनी वजनश्रुत्वादिव्य
 रूपसूयकं ॥ १० ॥ दहिनीदीसशाखधुलपन वामकसूयहा न
 कं दहिनीवामकसूयनंदनः एकहस्तनीनकं ॥ ११ ॥ पूष्यधूप

नेवद्यदीपं-सर्गंधमाल्यविलयनं ॥ कलध्वज प्रतापचामलवज
 द्यौःसंललितं ॥ १२ ॥ ब्रह्मवृक्षसमलनिर्गं कायवाकसंविह
 कं ॥ येन सत्कारगतिनित्यं-आयुआत्रागसंपदं ॥ १३ ॥ ॐ ॥
 ॐ नमो लोकाकनीधाय ॥ लोकेश्वरं विमलशुभ्य रुपादचिरं-मा
 र्गहृता पथितदभनयाचवाच-सर्वहृतादियनिष्कृष्टविमल
 दहं-हृताधिकाल ललितं सिनसानमामि ॥ १ ॥ वेनयहृद
 वसता ब्रह्मवहा-प्रकाशितगङ्गाजलसुसिखयस्मान्
 ॥ सलजस्यपदितानागतैव नस्मान् दृष्टीमहायनमविस्म
 यन्मान् ॥ २ ॥ संपूर्णचंद्रवदनललिताललात-दसादिनी

॥ १८ ॥

गतमहेश्वरदवप्रता ॥ वेनयसोहवजना-प्रतिवाधनार्थ-दवा
 तितदवमतिमान्जमीश्वरत्वं ॥ ३ ॥ वेनयकामलहृवाप्रति
 वाधनाय-स्केधात्ससंललितमहाशुभलजनीकं ॥ तिर्यक्तुव
 हितितामहादवप्रता-लोकेश्वरं स्पनयनं सिनसानमामि ॥
 ४ ॥ वेनयवेकुवजन-प्रतिवाधनाय-नाजीवयतिहृदया-प्र
 तितितृतासो ॥ नानायतोतिहृवनेश्वरं ननुवतस्मान्-पूसात्वम
 वपनमारुमयवनान्य ॥ ५ ॥ चंद्रांशुर्कसादवलाहितहकि
 रुता-शंदसनाथमहीनीनसूनाचनाखी ॥ यतिस्तुगोशक्तिनवि
 रुविलाचनाखी-ध्यालला नमस्तुमहं नमामि ॥ ६ ॥ सान

३०
 २५
 १५
 ०५
 ०
 ० cms. 5 10 15 20

अथ विनययाजि नृकि हाजी वाधाय देहा नृकि हसय सती
 यः ३५ गतसु वजिना सजय पसिद्धा यहा विनासि कल देह
 मह नमामि ॥ १ ॥ वेनय वायु निगा कनस नसिद्ध यः नाक
 नाथ मुखगार्थ विनि शृता सो दव समीप न ना भुवि ऊत ला
 जा मिया यथार्थ कल देह मह नमामि ॥ ८ ॥ वेनय वायु निगा
 य नमि सिगानी सवाध नार्थ मूदना सुगता कनस यनि शृ
 ना वनून दव चलाप्य कस्मात् देव्यसिद्धि कल देह मह नमा
 मि ॥ ९ ॥ वेनय समे ला अहिला विना वस विधिय प्रवल ल
 ऊन पाद पधात् यनि शृता हाग वनि धन नो डहि न जेला क

१०
 ०५
 ०
 ० cms. 5 10 15 20

नाथे मस मसिन सीन मामि ॥ १० ॥ सैमान मुक्ति मयि सैस्ति नम
 वनगु कानू ल्प नृकि हव चानू निसल वर्ग ॥ हया स्ति नम मसदा
 स्ति नम हवर्ग मव महासय वनय नम नमामि ॥ ११ ॥ एक नपा
 दल कन हव ल्प कन चका नम वल मने नन ला क धा गो कल्या
 न देव नृकि लिला गवं कि निस्वास वायु वन गसु वनि वृत्त स्या
 त् ॥ १२ ॥ स्वतर्जनी मुख धृता हित तर्जनेन संवा नीता धव हृम
 नृगाना नखस्य ॥ कारवाध नैज लधि ना यम ला सन स्मात् सामथ्य
 मी दृष्टा महा हव नृक ना न्य ॥ १३ ॥ कादै वल्ले वघन नै नन चान नृ
 य सैदर्शनीय वल कामल बाल चंडा ॥ इवी नमान मथ नै नृ हय क

प्राग्विकान्द्रः स्वसयनकाचनस्किन्तु ॥ १४ ॥ अवावर्गजननी
 रानूरावलीसा. काटिल्यचान्विकटास्वसिनाइराय ॥ कल्लोध
 नञालिगविस्फुलिगाशुवोकि. धूमावलीवलिमलाननूऊरुग ॥ १५ ॥
 ॥ त्वत्कांतिप्रसविसनभदिकानन. पञ्जासितनक्रयकसासकल
 युलोहा ॥ पर्यनङ्गसुभसिगाहवनधूयनः मन्यविलजितिखिल ॥ १६ ॥
 तवकोतिप्रसात् ॥ १७ ॥ विधूर्यकोमागिकसंभर्गमर्ग. ननातना
 साहिनसंकथकथ. पनाथसंपादिनसंवर्नवर्नः नमामिरुमिध्वन
 नाजितजित ॥ १८ ॥ अपित्वनिर्वानहवस्किगस्किर्ग. पुरास्वनाधि
 स्किगसहितंहिर्ग ॥ अमीवृतालभजनाजिबोधिर्वः नमामिरुमिध्व

नवाजिनीजिने॥ १८॥ गुरुकिमालामित्तर्कलंकलंकनस्वपा
धर्मयकजंकज॥ नगानृगसाहितसैवनेवने. नमामिहमिध्वनना
जिनीजिने॥ १९॥ सीधर्मधमगुरुकुवृक्षपनेयनेगुरुदिसैरायसस
रुनेरुने॥ विकल्पहीनाध्वनिदणकैकाके. नमामिहमीध्वनवाजिने
जिने॥ २०॥ कथताकथगाह्यसानसनी. सनसत्यनिपूनिधर्म
कथ॥ कथनीयविवाजिनसत्यपदे. प्रसम्यधननीध्वनवाजवने॥
२१॥ चननेनिजनीयाजगात्यसले. गवसीनूहवाचनवाचनने नव
सारवीसत्वविद्विषने. प्रसम्यधननीध्वनवाजवने॥ २२॥ क्वनि
मित्तगागयवार्थतने. नवभूत्यतिनेजनधर्मधने. धनसीध्वविवा

धितसिद्धिपदं. प्रसीम्यधनशी. एव न बाजवनी. २३. वनसत्सहजा द
 धिर्वेदमूर्ख. मूर्खतायिगसर्वनी नृकिपदं. पदह्रस्वनल जनानुपदं
 प्रसीम्यधननिष्पन्ननाजवनी. २४. लाक एव नायक वनलमाला.
 मचीकनशी वननलपादं. अवापियुग ननु रूषवीगं. ननेवलाका ३
 मुसमंनरुदं. २५. ॥ इति श्री आर्यावलाकिं स्वनस्य नलमाला ॥ २९ ॥
 वलागुं समापं. ॥ ३० ॥ ॐ नमो ब्रूधाय ॐ नमो श्री वसुधादेव्यै. वृका
 नसंरुवमूर्ति. वरुजाम्बुदनं २ वसुधाय कना वृद्धि वरुगुलनजं
 ॥ १ ॥ नमोस्तु २ रं श्री वसुधादादेव्यै २ धनजनमहि सिद्धिदायनी
 जननी. २ ॥ सूर्यस्य विदूषना सूरवृद्धिनिर्णय २ सूरवावर्गि गम

॥ वृकानरसंरुव ॥ १ ॥

तिर्य. समनु अकनिष्ठ. ३ ॥ धातु अरु प्रकृति. धातु नाना नल २
 धानशी सर्वमंगा धार्यनलाकानी. ४ ॥ नागद्वयमाहजयना
 ज्वाधियकृत्य २ नागसपुत्रा नाना नायक माकृता. ५ ॥ चतुना
 जनपथनं. चतुयानि मूक २ चतुनार्य सत्यधर्म. चतुवर्गपार्थ. ६
 नपालसम्पत्तमसि. वसुवधु मास २ माघकृष्ण कृतिया म्य. कृ
 नं श्री कुलिश चार्य. १ ॥ ॥ इति वसुधना चतुना कृतागुं समापं.
 ॥ ३० ॥ ॐ नमो ब्रूधाय ॥ धिनमद्रसंसा न. साधामनूकनं. प्रिग
 डाल. धतिडाल. जन्मयाहमि. यनवर्नं कात्तीडाल. धवलसं
 सान. नमो नमो सिद्धा वृध. धर्मसंघ. १ ॥ धिनमद्रसंसा न. या

॥ धिनमद्रसंसा ॥ १ ॥

112211

॥ अनेव ॥

मिता नक्षत्राणां प्रदाता ॥ २ ॥ अमिताभं वसिलं धनं निर्मलं व
 दना २ श्रीजयलोकं धनं पुनः पुनः पुनः ॥ ३ ॥ अथ नाथालि
 कवसं ॥ ४ ॥ नगचक्रं २ माधवसिंहगंगासिंहमिथिलानिवान
 ॥ ५ ॥ ॥ गिलाकनाथगीर्णसमार्य ॥ ० ॥ ॥ उतमालाकनाथाय
 सोमम् नृतिं अऊनमसिसेरुव २ अनादिवृद्धं अहं यमिपनम
 धनं बालचंद्रमकुटावलरुषसं २ मूककं गह्वर्यकनं व्याघ्रव
 र्मनिवासनं २ गुवास्कि यहायवीता ननगिनबालिरुहाहिना ॥ ३
 ईकं उलमृस्तिरुनक्षत्रकटिकया लधना २ ॥ अमलस्तिगावन
 मानदपविभाचना ॥ २ ॥ जिनाजितालयलोकप्रवृद्धा २ ननगिन
 नृपप्रकाशिता ॥ ३ ॥ कमकहं मधुहगिनिवावनाहा २ मर्यपुव

॥ श्रीमद्भक्तिसिद्धि ॥ १०॥

॥ वासुदेवा ॥

धनिधनि-२०

नननद्वयाचिगुणः॥ ४ ॥ कनकसुखवतर्द्धननाहा २ मार्ग
 कदातयति यनमेष्वन॥ ५ ॥ गंगिलाकनाथगीर्तसमार्षः॥ ० ॥
 गंगिलाकनाथय॥ चामिकनावलिमसिमकूटावलि २ विचि
 त्तविचिधनलविह्विता॥ ६ ॥ नोवरुयकनरुनकनूलस्वन २
 ननमूसूनासूनसविनचनल॥ ७ ॥ तिर्जकषतमनूतिसूतान
 ल २ कनूलद्वयादधिसागनविदिता॥ ८ ॥ लाहितवर्धसुललि
 त्तनूल २ कमलनयनविकासितकामलमुख॥ ९ ॥ हाय
 तेनागकूजलविचिखायानगन २ मासिमाधवसिततिथिआ
 लनाथन॥ १० ॥ गंगिलाकनाथगीर्तसमार्षः॥ ११ ॥ अरु॥
 गंगिलाकनाथय॥ गतिधनिलसृष्टीचिगुणः॥ सूर्यसूतिर्म

112811

लनाहिलनाशा॥युंकरुंगमृडकायसूनासा॥नंगिआलंनृगान
 लसिंह॥१॥अऊनेवर्हसूनीनगुकाशा॥कांचनपदुविशुद्धि
 नाशा॥आधधियाइलसुधुकरनीयसयत्वंयधिगानलसिंह॥
 २॥आयनयुवसूनीचिननासागवधमूधाअनिनीलशुभ्रनी॥
 सुधनअनिनीलशुभ्रनी॥यसयत्वंदयिगानलसिंह॥३॥स
 निधसुर्गसिन्धुमंरुसुधासंहीगुलिवर्हसूनकसुर्जिहा॥विंस
 तिर्विधमिरुगुदंतीयसयत्वंहपिगानलसिंह॥४॥वृक्ष
 वृक्षसुविनयिवा॥सिंहहनुमृगगजससिन्हा॥कांचनसुखवि
 उतिमृदययिमयत्वंयधिगानलसिंह॥५॥गङ्गानिलयस्थ
 सिविचिनी॥कालगनायविदंशिरुमृधा॥आनकसुधगनासनि

२४

निडा॥यसयत्वंयधिगानलसिंह॥६॥चक्रमलंकृतनरकसूया
 दालकनमंदिरआयनयष्टी॥वामलचक्रविशुद्धिपादोयस
 हिलयधिगानलसिंह॥७॥साककुमालबलासिकुमालाल
 कनिचिरुसपूतसलिङ्गा॥लाकहितायगगाननविशयसयत्वं
 यधिगानलसिंह॥८॥अमलनवामलचंद्रगजंदा॥मालपका
 ऊयभिक्षुसंती॥सर्वगनाकनलाकविसुधा॥वेदमिगेतम
 शोमनियादो॥९॥ॐनिशीसाकमृतिहृदावकसुखधना
 सुवगायंसमाफं॥१०॥ॐआंनमासानदायः॥ॐआदिइआन
 आवदिनपादपद्मेहंसासन्नजिनयनसूत्रमंगलायकसुनिर्द

ॐआदिइआन॥२१

मृदुगुण १२

कमसुवासितदहदवी॥ गंसा नदा सकलसिद्धिसदां नमामि॥ १
 हंमालय विमलसंस्तुतपालनृपि॥ नपालमधुलजालकमता
 नृनिधि श्रीकास्मिने चरुवने स्वनविधनृपि॥ गंसा नदा॥ २ ॥
 वंदाननादगुनसंचयकासिनेन॥ वागीश्वनि लिखुवने स्वनवि
 स्वनृपि॥ सर्वनृपे सकलपुस्तकश्रुतमाला॥ गंसा नदा॥ ३ ॥
 नृपेति लंभससिधुर्नकास नृपि॥ वानिमना ह्यसूत्रालिगपि
 यूषीच॥ नीलात्यला नयनविद्वनतस्यजागि॥ गंसा नदा॥ ४ ॥
 सैसानसानवचना तवसूषसना॥ दवानना अपसना धियकि
 ननानी॥ वांका मनी नथचवा ऊनसिधैता॥ गंसा नदा॥ ५ ॥ कर्पू

२५

५॥ १२५५५५ २२५५५५५ १२५५५५५ १२५५५५५
 गपूगपनिप्रतितांवा नादिषूयेसूवा अगुनचंदनपूजितानि॥
 निरूपनंभसिलसा तवमकरावे॥ गंसा नदा॥ ६ ॥ संपूर्णकारवतवश्रु
 यसानदास्पपातालमध्वनि नसालयपूजितानि॥ मैत्रादिवाक
 सकछीवृत्तसिधियंता॥ गंसा नदा॥ ७ ॥ वचकूपमंजुतांदिता
 मैत्रनाय॥ सर्वाथसाधकजटासृगतिं तमवे॥ त्वं हानहामरुवड
 खविनामकालि॥ गंसा नदा॥ ८ ॥ गंनिश्रीसानदा सुवर्णसमा
 पः॥ ९ ॥ अंनमावृधाय॥ श्रीधर्मधनुचेतजितवलवैदित
 पादयंकज॥ मासिछादस॥ पूर्यमासिजामितापनिमैरुलं॥ १० ॥
 नमास्तु२पंचजितवलधर्मनाजमहामूनि॥ ऊनऊनपदाऊमा

कमसुवासितदहदवी

५॥

वीपायनासिविवोदिनं ॥ १ ॥ चंद्रमंडलमध्यसेखितं चक्रधरं
 निमहामुनी ॥ सिंहमानथनायमनिवल्लभतवर्हमहाजालं
 ॥ २ ॥ पाच्यादिगंधितं रंजितं निलसमदीनिमानुधनाजितं ॥ वस
 मसमसयध्यानधनितं वृधथानमहामुनि ॥ ३ ॥ याम्यादि
 गंधितं नलसंरुवडा निडलाकसंयालिता ॥ पुनंगमानुधः का
 चननालं वनदहसं ससाहिता ॥ ४ ॥ यश्चिमदिगंधितं वाय
 मुनिवनं अमृतपुलं जितव्यापिता ॥ मयूनमासनध्यानधनि
 तययनागमनिपहं ॥ ५ ॥ उरुनदिगीकितं अमाघसिद्धिबल
 स्यामवर्हसुतिर्मला ॥ गवूनमासनअरुयंकनवसर्वसखउध
 नधी ॥ ६ ॥ श्रीकजसखमनमूर्धनि वरुधंथसूधनिता ॥ विष्वा

व्यापितजगतनाथमानसखनवोदिता ॥ १ ॥ जातिचंयकमानति
 वनमातयसूहकंठकि ॥ पालिजातककुडधवननागकेसनपू
 जिता ॥ ८ ॥ ताहिसिनकपुनकुंक्रमचंद्रननविलेपिता ॥ विवि
 धिपूषकमलउत्पन्नचियसंरुककपिता ॥ ९ ॥ वीनावेसा मृ
 दंगसूजासखवायसुमंगला ॥ लेरावेततिलोरुमाउर्वसि
 तिषदकृष्ण ॥ १० ॥ रंजितादिलाकपालसूखासूमगानमा
 वीदिबोदितदं वपुषमहनाडिगमालिका ॥ ११ ॥ वूर्नलंपित
 सुहकिन्ननपूरनचंद्रसूनीर्मला ॥ देवमानवजुजकैतनना
 गलोकसपूजिता ॥ १२ ॥ कायवाकचिरुनिर्मलविवूधगन
 सप्रदकिता ॥ १३ ॥ वनकृष्णनायवामलघेयगवमनानथाः

१३ ॥ जया देव ह्रीं मि कुंज आवलि ॥ स्वहिता सुमना हंक हनिह
 नवका पूर्णद न देव सम न स पूजिता ॥ १४ ॥ शुभ्यानि शुभ्य म
 हासुते सर्व भूयति नैक न ॥ नीनाल व नीला कानं वाचवृद्धि मना
 मयी ॥ १५ ॥ श्री लयं रू धर्म धातु धा निरूप प्रकाशिता ॥ देवांति देव
 महादेव सर्वदेव न पूजिता ॥ १६ ॥ लोल वेषु महान न क पंच्यत न
 त गर्ज स ॥ पूर्व जन्म कथन स रुका जम पापिना ॥ १७ ॥ श्रुति सिद्धि
 सर्व सिद्धि त्वं तु रव रव मू कि दे ॥ चैत्य गर्ह महान स सि सै रुका
 हि प्रदक्षिण ॥ १८ ॥ सफ संवृ क जन्म रव विरु नाज के त्या सुलं हि
 ना ॥ किं किना म महा माय न स्य जन्म न पावनं ॥ १९ ॥ नाम नाव न
 समन हा नित वृध सन न स गं म्य ना ॥ विरु मं हन काल विरु सिद्धि

राव स मू कि दे ॥ २१ ॥ दानि दु निनय सम नू रव उदि न त्व महा
 मृति ॥ अहाना न प्रद क्ता य शुखा वनि म ह सा प्र या ॥ २२ ॥
 ॐ ति वे स्य व रू गी न समा फ ॥ ॐ ॥ ॐ न मा मं रु नां थ म ॥
 वं का दि दे व म नू जा स न पू जि नां ग हाना धि पंगु स मय गु ल वि
 ऊं व नं ॥ वागी ष्व नं स न गु न्म न नं न मा मि ॥ १ ॥ वेदा दि आ न न
 च ना बिल मं गु रि हू कू कू कथ म दि वि न स व शु गी द श वं ऊ किं
 न य नि रू व नं न च वा गी वि हू ॥ वागी ष्व नं ॥ २ ॥ हान प दान स
 लिल न म वि न वृ धि वा श्र स्य नि दि वि रू वं च व हू हि दं हं हान स
 नं शि शु व नं स च ना ज न लै ॥ वागी ष्व नं ॥ ३ ॥ न ला दि सि प नि क न
 प न पू नं ह य चि न वि चि चि न गु ल ज न मा न नि यं सर्व हू कान क

वं का दि ॥ २३

उत्तिमेशी नेपाली २५
उत्तिमेशी नेपाली

धनाहिनिवक्रपूजं ॥ वागी ॥ ४ ॥ चक्राविद्धि न विपरीतिथि न वि
क्रवृद्धि ध्मा नाधियं विविधिना सूखने जनीय विद्यापति सत
गुरु तननियुक्तं ॥ वागी ॥ ५ ॥ वा निपति हजं च नय वाम चा
पंयुक्ति क्रिया नमसिकमगुरु ध्यानं गुरु नमो नम च नमो द
विहिहं ॥ वागी ॥ ३ ॥ ॐ निवागी ॥ वन वेदना सुवगा गुं समा युक्तं ॥
॥ ॐ ॥ ॐ नमो वृधाय ॥ उत्तिमेशी नेपाली संज्ञादि धिने स्व
यं हवे न ॥ नैति काटि देव पुत्र मामि धर्म धा रु कि ना लय ॥ १
॥ नमामि वृधं ये ला कं नार्थ सकल जगत् गुरु ॥ नाच नि मा म कि
वेद निता मा ये वजि न धा रु मं तु ली ॥ २ ॥ ब्रह्म दक्ष बल न वति नं
पूष काय गुरु दधि २ ला रु मा ह विषय काम सर्वका दिवा व

२८

सिद्धि ॥ ३ ॥ पूर्वमुखशी हस्ति वाहन ॥ ॐ नु नील वरु द हा ॥ अ
नग देव माल तिर्जि न वजा सन शा जू को हा ॥ ४ ॥ दजिन मुखशी
उने गवाहन उदिन सुवर्ष द हा ॥ विविधि नल संपन दाय कं
नमामि शा नल संहवं ॥ ५ ॥ पश्चिम मुखशी मयू न वाहन य प्र
नाग को ति द हा ॥ शा जू मि नां रु क न्ना मय सर्व लोक प्रतिया नि
ता ॥ ६ ॥ उरु न मुखशी गनु वाहन हनि न वरु द हा ॥ सफरु नि
त्व हा शा जू मा घ सिद्धि सर्वग ल विद्या दाय कं ॥ ७ ॥ धर्म धा रु मं
तुल मा म्य रु दिक वरु द हा ॥ ति ह वाहन ध्मा न मयू नि ये ला क
नाथ शी वे नाच न ॥ ८ ॥ ब्रह्म ब्रह्म समल निर्यं जां गि स पप्र ना जि
नं जगत् पानि क न्ना मय सर्व देव ग ल जि ना म सि ॥ ९ ॥ धर्म

२५

इवमन्त्या ॥ २ ५

हामिसमाहितरुग्ने॥ मामडाधिलय माविनूर्वर्गं आहिमहाक
ननास्मविदंगे॥ २ ॥ रुक्मातिमिलायाइकनिर्णयमननमहाह
यविर्वलगां॥ पालय रुगवननवलो कस्मा जावंग विलिचि
या मितविषमा॥ ३ ॥ रुग्ममंतगियहनमरुस्यं रुग्मंगाना
शक्षिसहस्रं॥ नाथमया रुग्मपापमस्वरवं नासय संपति का
यकइखं॥ ४ ॥ ऊर्जिविगसंका नूक्षनिर्णयं ला कानिर्णयं रुग्मनि
हसस्यं॥ तंलाकं रुग्मनसमयसमसं वांचिकननकं विगस्मा
स्यं॥ ५ ॥ सत्वा नायकविचित्रमहितं साय अन्माहितं म
पिपनिहितं॥ नदिदा निर्मममानसपापं रुग्मयूनाथक लास्मा
मिनाय॥ ७ ॥ देवमनूष्यां सूनजा रुक्मा निर्धकननकं धनगति

ना॥ संत्वा ऊतिव सति सदाता न ऊसिगानिगितवस्म विवाता
 ॥ १ ॥ नममहायनि सऊका न्य विऊसनीना गनका नृस्थी॥
 नृनिगृहगवन रुनकि एतामि जावत ननकं नो स्म विस्ता
 मि॥ ८॥ किंचाधविक नाहिपनागं मंचसि एगवन मामकि ना
 र्थ॥ अथवापेऊक वातवपूय ऊतमसिग्विध कथमपिपूयं
 ॥ ९ ॥ समनंय ना पिरुसिक यनिगुरु ऊपयसिक नृव किमकि
 मदहा॥ नस्माह न एगवन पनहि नृऊ ऊमाकृमाहि नृऊ॥
 १०॥ दंगिगु नंऊत पूरु कनायं नाऊ मथं कथ यस्म विचिगुं॥
 मासाहि सिना सिषय निऊगं एवना थिया दनुमदले॥ ११ ॥
 ऊऊन गुतिका पाइक सिद्धा सिद्धावधि मधि मंगुविगुहि॥ सि

३०

ऊऊऊस्यनिनपूनदृष्टु ऊऊऊऊस्यलंलाकसा॥ १२॥ ऊऊनच
 चनन विलाचनहिना विविधि व्याधि महाहयदिना॥ ननयु
 ॥ १३॥ गऊऊ व्याधि
 यगह जाकिनि अयां गियां गि सदाऊगिनी॥ अनगिनिनस्य य
 नाऊमइस पीलंयस्य त्वोजिनरुत्वा॥ १४॥ नृनि लोकं वन
 किं पियमानं॥ मंचसि एगवन मामकि ना र्थ नो मिहमनदिन
 मदिनपानि नाअयशासमा कूर्याति॥ १५॥ बद्धिष नृद्विय
 चंचलमनसा रुतवहूपायं व्याकूलवयूषा॥ नित्यं ऊत्सम या
 स्मिन सकल ऊथ नऊतिमिलं रुवलाविकनं॥ १६॥ नलून सं
 पातिममलाकं अ पुनष्टा विविध कलिनम्यघा ऊनरुत्वापा

शिकः खं सुगतिरुवा यो यास्मिन् भा ऊ ॥ ११ ॥ माहमद्वयविना
 सनहं तु त्वं ससा नमहा दधि स्य तु ॥ प्रतिबुद्धस्त्वस्त्वय नवारुत्वं
 गुनु इति गति सागजनाह ॥ १८ ॥ दसिगसुगता नूतनतत्वं त्वं
 पानीकवह इति तस्य ॥ त्रिर्जित इजय ममथ माना त्वं सति
 पूरुवा नवयान ॥ १९ ॥ सकलजगान नि किंच न दहा त्वं पति
 मखि न जगत्सु दहा ॥ एगवन मनुष्यकनू लसिधू लंजनवि ३१
 विधा का न सवंधू ॥ २० ॥ लीला विन विन कर्न विहंग त्वं पय
 हिन विषयं वा संधा ॥ दिव्य ध्म न स माहित चिह्न त्वं याचक सा
 धान न चिह्न ॥ २१ ॥ यत्र मुख कुर्य नपि कनू लवा मयि यनि
 नाखं न कवाति हृत्वा ॥ कैथ मिह माहमहानगदं विखा

यसत्रिला कुजनं हवंधू ॥ २२ ॥ सकलजनाथं पुनिया कनू
 ल्मा सांति हवंधू त्रियं नू नरु नना ॥ ऊन न नऊ सिषही खडा
 नं एगवन पूनरु मा विनू डा नं ॥ २३ ॥ नाथ किया दा व्यास्म
 विसाना सगंधं खूजथा वज्रधन धा ना रू नऊ न विगनां नक व
 हृदं सनाति नी नऊ न मनिह मस्य रवी ॥ २४ ॥ ॐ गिरुग
 वक्त ससनं न्य ना ऊतू पृथ्वी मम नं नऊ गद कनू रतां ॥ श्री पा
 ननका च नवासनं ऊनय तु सुंदर विविध विना स श्री मनु
 ॥ २५ ॥ ॐ निशा आर्या वला किर्न खन स्य च नपति माल वि
 न चिर्न वार्ग समाप्तं ॥ ॐ ॥ ॐ नमा वृधाय ॥ प्रतीप नाथ च न
 नान विंद त्वं वृध सनसं किर्न लं फलाय ॥ असंख्यं पूं स वृध

नृपेय नाथ ॥ २६

त्वनार्यः ॥ त्वंधर्मस्वामिजितपादयय्य ॥ १ ॥ धर्मकिर्नतिमृति
 लाघविहं यंजियनानिविपनीतकार्ज ॥ विदवनायनसूह
 तिनस ॥ त्वंधर्म ॥ २ ॥ नायननायपतिका नदहं किर्तिविधा
 नंवलहं तुइय ॥ पीनामनाग यनियूनदहं ॥ त्वंधर्म ॥ ३ ॥
 जनकद ॥ सिनपूष ॥ अविंत्तदिनं तिसिअविलाघं
 नायमखंडलरुलं कृपापं ॥ त्वंधर्म ॥ ४ ॥ संकृताचैतअप
 नायिकर्मदहिदहिउपकानकर्म चिरुअज्ञानि ॥ हदेव
 कर्म ॥ त्वंधर्म ॥ ५ ॥ रुतकिचियं गुमिनपदसं मेमे ॥ सुद
 वं ॥ नासहधर्मसमनं स्वामि ॥ त्वंधर्म ॥ ६ ॥ धर्माधिकानं
 गुनदेवतास्त्रनकककालिकमलमूकसं ॥ त्वंसंघसन

त्वंकनूखहनाय ॥ त्वंधर्म ॥ १ ॥ मंगविधानं कृतसाधनियं संवृष्टि
 नहविस्थापनियं ॥ सर्वाधिपायं हननं च इच्छतं ॥ त्वंधर्म ॥ ८ ॥ गुन
 पदसंपललधनाय ॥ त्वंसिद्धिवाकममदर्शनाय ॥ यत्रमविहयत्र
 मंथनाय ॥ त्वंधर्म ॥ ९ ॥ लोडुकतादामननासनिय ॥ मांदेवना
 यसनतागनीय ॥ पूषतुदेवपहउपहानं ॥ त्वंधर्म ॥ १० ॥ जीनगु
 नसनआस्था सर्वपाप पुनासनं त्रिपूगतरयनासन काटिया
 पविषसून ॥ त्वंधर्म ॥ ११ ॥ मत्रगतयपनिमूक ॥ सर्वकार्यसिद्धि
 पद ॥ इः खहनसूषययं मोऊमूकिऊयपदं ॥ त्वंधर्म ॥ १२ ॥ त्वं
 देवसननं पितासुधावतिगमनं यथ ॥ यत्पयथतिधनपूनादि
 सर्वकार्यसिद्धिपदं ॥ त्वंधर्म ॥ १३ ॥ निजीसाकमूतिरहानक
 नागंसमाफ ॥ ३६ ॥ २ ॥

सर्वरूप २१

ॐ नमः लोकनाथाय ॥ सर्वरूपमसि कं पितृभ्यः ॥ कांतिमवचत्रि
तं नवनय ॥ सर्वरूपवनदीव्यसूर्य ॥ तं नमामि दशवलवननय
॥ १ ॥ हृदिनाय विमलं धिगुक्तं ॥ कां किलाय विविदि व्यगुक्तं
॥ सानिधनिलं मृदु कंचित्कं ॥ तं नमामि ॥ २ ॥ सखकुक्षु
मृदं विमलार्धं ॥ जन्मदः खविगतं विमलार्धं ॥ लागस्वर्गमथनं
विमलार्धं ॥ तं नमामि ॥ ३ ॥ पूर्वचंद्र इति साहितवकं ॥ सर्ववृद्ध
मसि लामलवकं ॥ ब्रह्मयकजिन लामलवकं ॥ तं नमामि ॥ ४ ॥
नस्मि सह विविगुसमृधनी ॥ पूष्यवर्ष भगपूजितमृधनी ॥ न
लेवर्ष भगपूजितमृधनी ॥ तं नमामि ॥ ५ ॥ नृपयंक विनंचि
वीर्यं ॥ कांचनक वलायित शीर्षं ॥ नृविगतन सखाहित शीर्षं ॥

२३

तं नमामि ॥ ६ ॥ दीकीवनमकुटमसि मकुटं ॥ चंद्रपलमकुटा
मसि मकुटं ॥ आगतमृषमकुटमतिमकुटं ॥ तं नमामि ॥ ७ ॥
चानूर्यकज दनाय तनं ॥ दिव्यहानविप्ला यननं ॥ ध्यानमाकु
गुरुसंस्कृतनं ॥ तं नमामि ॥ ८ ॥ शुद्धकर्षं गुरुभतिनकर्षं ॥ शु
द्धहानवल साहितवर्षं ॥ शुद्धपहावल साहितवर्षं ॥ तं नमामि ॥
९ ॥ शुद्धकृष्णमनियामुलंदंतं ॥ नृषु सूनकृष्णनिर्मलदंतं ॥ विषयं
चदभयं चसुदंतं ॥ तं नमामि ॥ १० ॥ उच्चवाकससूनासूनजिका ॥ ध
र्महानकृतपायनजिका ॥ गंधधूपससूनासूनजिका ॥ तं नमामि ॥
११ ॥ मघसदं विनादित धायं ॥ सत्यधर्मनय शुद्धित धायं ॥ दिव्यव
दियनवादिन धायं ॥ तं नमामि ॥ १२ ॥ शीवशीवदभगीवशुशीवं ॥ कांति

विजितवर्गीवस्यीवं॥हमवर्धुमनिशीवस्यीवं॥नमामि॥ १३॥
 सिंहमयाहिमकुंडसकार्य॥धनकायगुनसागत्रकायं॥अष्टशुन
 रुक्षनिर्मलकायं॥नमामि॥ १४॥अष्टशुनकहनिनसाहितवकुं
 नीलपीतहनिनादिनवकुं॥हानदवनशुहसाहितवकुं॥नमामि॥ १५॥
 हमनागकनसकनवाहू-पूष्यदानशुहसाहितववाहू
 ॥धनवीर्यशुमनाहनवाहू॥नमामि॥ १६॥वामलचक्रविहवि
 कहुलं-विमनऊकोमलयकहुलं॥रुनधनसननागहुलं॥
 नमामि॥ १७॥नागदधननूवर्जितविलं-शालहानसमहाविन
 विलं॥कल्यकाटिसमनाहनविलं॥नमामि॥ १८॥यमनाहशुह
 साहितनारुयमयातिशुनिर्मलनारु॥बक्रयानिशुहसाहितना

३४

ह॥नमामि॥ १९॥नऊक्षचक्रविहविनपादं-अकसकाकिविना
 जिनपादं॥नागयऊगक्षवंदिनपादं॥नमामि॥ २०॥हासकनाइ
 निनाजिनपादं-दंवदानविष्नाजिनपादं॥सर्वदवगक्षपूजिनपा
 दं॥नमामि॥ २१॥सर्वदवगक्षपूजिनशिर्षं-सूर्यकाटिसम
 हाविनशीर्षं॥दिव्यकालकालिनाधिनशीर्षं॥नमामि॥ २२॥
 पूष्यधूयसदपूजिनशीर्षं-गंधदीयसदपूजिनशीर्षं-मालवस
 नवपूजिनशीर्षं॥नमामि॥ २३॥शिशुवतधर्मस्वामि-विहव
 स्पगलेसकल-संकसगानिन-नलकृमकुटादिहि॥पुष्टु
 सननेपथंगि-यनशुगनस्पदयूकथं-ननंरुवंगिननमीऊस्प
 पथानिगमनं॥ २४॥निशीनूयसुवनागुंसमापं॥ ॥

ॐ नमो लोकात्मने ॥ सुखागुणान्नयमो ननु विद्या गुणस्तथा
या कुरुमिदं जदवा निस्यते ॥ लोकं च न गुणनिधिं गुणसागरे
न ॥ नित्यं नमामि मिलसा कलितं पूतम् ॥ १ ॥ वात्यगुणा स
वतियते न सा वृषा ना ऊ रू ष्टुः रत्नदीपी दिव सर्वसत्त्वा
वं विह्वलजगदिह ॥ यत्रियानक्षयं तस्मै नमस्तुभ्यं नमः धीयथा
थ यतः ॥ नित्यं नमामि ॥ २ ॥ अक्रूरमानव नृक्षको भमानव
रुः क्षत्रिभनऊ न विरुषितगा गुणैः ॥ सर्वऊन्यपसकाय
नवस्मनर्त्तं कायनवाच मनसा यत्नमा मि नित्यं ॥ नित्यं नम
मि ॥ ३ ॥ संसात्रसागत्रमहा नयना सदकं एकविंशवचन
रुषितं लोकनाथं कनायित्वं गुणगणनायमभ्य ॥ त्वं लोकनाथ

मम नो कृतश्च मम सहं ॥ नित्यं नमामि ॥ ४ ॥ नत्वा ह्ना ह नन
मस्तु न दिव्य नृप वाने न्द लग्न जगत विह्वित लोकनाथ ॥ वा
संभवा नृह धना वन दाय सर्व ते लोकनाथ च नक्षत्रास्त्वमि
॥ नित्यं नमामि ॥ ५ ॥ उक्ते नृपाय निवृत्त सनसिद्ध संधे ग
धर्व किं नर महा नग नाग यज्ञ नाथस्य तस्य हर्व च नक्षत्रा
स्य त्वं लोकनाथ च नक्षत्र सनक्षत्रास्मि ॥ नित्यं नमामि ॥ ६
॥ एतपि च गन्तुं नथ नाशसिही कृष्णी न वृत्त उमहान
कनाज नाशः विष्णु ननाशु न भक्त यनिवान ह्नी ॥ लोकना
थस्य च नक्षत्र सन नै गतास्मी ॥ नित्यं नमामि ॥ ७ ॥ अर्चयेत्वा
कनकेने नहि श्रय मति नक्षत्र विष्णु न सने गुप्त सागनापि ॥

लोकस्वनस्ययथितः कितिनिधनत्वया नयीयतयसनि
 नियनमस्वनस्य ॥ तिष्ठन्तमामि ॥ ८ ॥ शुकासूक्तंयनिदि
 ने. वल्यथतयनसाफवंतिसहसाधनयुग्माका ॥ कु
 स्रधिनागतिकनाकयतास्यरुक्तिवदामहस्वनचिन्-
 तवपादरुणं तिष्ठन्तमामिभिलसाकलिपुग्मा ॥ ९ ॥
 ॥ ७ ॥ ॥ तिष्ठन्तमामिभिलसाकलिपुग्मा ॥ १० ॥ ॥

॥ ॐ नमो भूयः ॥ ॐ नमो भूयः ॥ ॐ नमो भूयः ॥

ॐ नमो भूयः

ॐ नमो

ॐ

॥ ॐ नमो भूयः ॥ ॥ तुल्यप्रभः भवतुः कलसर्वस
 लाः संपूर्णचन्द्रवदनाः स्वरूपयुने ॥ सर्वरुहानिमकृताधुने
 किमार्ग ॥ १ ॥ ॥ पद्मपाणिवल्लरुषिकेहाननाभि ॥ १ ॥ ॥ उम्भुग
 नवलपिन्नकपालवर्कः चक्राधचहीमकुषाचमिवासदरु ॥ ७ ॥ ॥ भवचं
 तुकिधचं मधुचं चक्राधः ॥ १ ॥ ॥ पद्मपाणिमदूवभूभ्वचं नमामि ॥ २ ॥
 मालाधचं कनकचक्रविहारीगः नृगुणयुक्तेरुविहारीकवालचदु ॥
 कृष्णादिनावलधचामुवभूवभूः ॥ १ ॥ ॥ पद्मपाणिमदूगभुकुननमामि
 ॥ ३ ॥ ॥ लोकनाथसर्वलोकेननामधेयः यक्षिणविकसदचंचल
 सूर्यचक्र ॥ चिन्तामणिपुवचक्रुल्लघुगुणः ॥ १ ॥ ॥ पद्मपाणिमुनिसर्वरु
 ननमामि ॥ ४ ॥ ॥ स्वहाननामिचक्राधकसर्वस्वाः संसाचर्पक

ॐ
 नमो
 भूयः

किमिवाभूवमग्रस्त्वा ॥ आलाकिरुपथमनूकचवाधिमार्गः कं पय
 नीः वलसार्गददंनमामि ॥ १ ॥ गत्वाचरुननचकेषु नृविंचीम
 ग्रः श्रीकिरुनंहदिवीसाचचूहंसपद्यं ॥ रुनाचकिं सकलदृष्टविना
 सूर्यीः कं पयपाणीनचकागिरेसेमंनमामि ॥ ७ ॥ सक्तुसयनिय
 मपालकरुग्रुमिः हधर्मचागुमिवसागरकामचूपं ॥ यधर्मकुमिवध
 मिरुनवमिर्कः कं पयपाणीहरसासकनंनमामि ॥ १ ॥ गत्वाचरुन
 मलिचूपमनीहचार्यः कुलोकनाथकुरुयंकलसर्वस्त्वादृष्टाभूवक
 वस्मचासिविमुक्तिदृष्टः कं पयपाणीहरकिलिषकंनमामि ॥ ८ ॥
 त्वेपुनल्लोकगककचूपावसेनः शुचिमुखंउदचपर्वकजिह्वमग्रं ॥
 कुदृष्टविपंदीनचचकिंसागुचानाः कं पयपातिः रुषनासकचंनमामि

३१

॥ ९ ॥ मून्यान्यरुकुदपिंदीकणसत्वाः संपीयककचूनमहः शु
 वरुनदिही ॥ यद्वैसचिचहककुषागुखागुचानाः कं पयपातिहरकुषागुषा
 नमामि ॥ १० ॥ गत्वाकमकुवनवर्जिकचदुभुर्यः चिन्तामनिर्दालिक
 चत्तपुलावरास्ये ॥ कयक्रचाकुगनेचचखनमार्कः कं पयपातिरुमरुन
 कनंनमामि ॥ ११ ॥ गत्वाचरुनवलिकरुग्नमनाचसः यदियकं हल
 मनूकचपिमुपातं ॥ धर्मकथनपचिंतपिरदानवकः कं पयपाणीवलध
 र्मददंनमामि ॥ १२ ॥ गत्वाचरुनदिविकंदलदवपुः दानस्य
 हिनकुषपिठिकदृष्टीकंच ॥ कं पयपातिरुपचीपुसुसुचिचत्तः कय ॥
 यपातिधनवद्विकचंनमामि ॥ १३ ॥ कंकामचूपमपदकिंनचाकुसि
 ति ॥ कामावसेनवचिंतकवचाकुसिहिः घातसचिन्त्यचिचर्किरुधर्म

चक्रं: नंपय्यातिवहचयधचनमासि॥ १४ ॥ विन्मृगुहसिकमि
 कोनिसमृद्धविकि: गलाचक्रनमृल्लिचयमनस्मचनी॥ निधुचिरंयूनघ
 नायददकि: धर्म: नंपय्यातिवहगगुधचनमासि॥ १५ ॥ इहिकु
 मार्गदपिभचहवध्वर्किंरुहृष्टुइ४खत्यपिडि नसर्वसखा॥ धन्या ३८
 दिवसिखहृविहिसमृधीचल्ल: नंपय्यातिवचकाचसिकनमासि॥
 १७ ॥ वाचाहमृभक्तनचयमहावचव: उमृगगनधनिर्कहयचाऊ
 सिहि॥ नमृहृष्टुयवनधगमहासमृद्ध: नंपय्यापानीकिरुहृष्टुहृष्टुनन
 मासि॥ १८ ॥ धुकाकुर्कनवसमलोमिविमुकिइ४खंनानोसेसाधिय
 चिपूविचिंमृगं॥ नंपय्यापानिवसकस: ननकसखा: नंपय्यापानिकु
 यनासकलंनमासि॥ १९ ॥ नानाहयंचमिविमुकिइ४खंनानास

दंदहयचाऊधोचरुनं: नद्यापिमागुहकनचचानिदध: नंपय्याति
 मृहयंचददंनमासि॥ १९ ॥ वाधिरुयंरवगियेधुसदाकिनिना॥ नमृ
 यकिवाधिरुयकुविकीगइ४खंनानासयकि: नंपय्या
 पानिहयनासकलंनमासि॥ २० ॥ धुकाकुमिनियमधर्ममृमाघ
 यधं: यमृकचाकिकिरुमिदियवृकचय॥ सर्वपुनस्यकिनध्वमृध्वमृपापं:
 नंपय्यापानिवलदायदानमासि॥ २१ ॥ निमृवसंनगुनसमृद्धिगया
 कचय: नानाकुमिकिचकपाजिजाके॥ चम्याकदागकिरुसायदसविकानि
 : नंपय्यापानिचयसुदानमासि॥ २२ ॥ दधेकुवचवचूने: नमंबेदे
 कस्य: गधर्वरुकुमनिदानववन्दिनकु॥ यनागमनृध: चचनमासकयामि
 : हृष्टुपीसाचगचूधुनमासकयामि॥ २३ ॥ नस्यथंनकचूगसुवनि

शुकाचंभानिचःपुष्टिबधनदृडिसुनधकासाःलायुविहृतिवहपुष्टिविमा
 जगामि॥पुनयानिकालसपियसुहृलोकनार्थ॥ २६ ॥संकिर्तिय
 किंनविर्विनासयनिःजाकुदिवाचनवनासमनूसाचकि॥ इष्टयेस्व
 प्रविष्टुहयपापविनासयनिःपुन्यनिदवधनरंरुवनकुयनि॥ २७
 ॐकिंभीमार्थावलोकिस्वधनसाःवधुदक्तःलाचार्यकनंकचभारुवकुपुंस
 साफ॥ ॐ ॥ ॐनमावधाय॥ ० ॥ लभुचभुवनःयकुकिन्नचःपुन्य
 कायगुल्लादधि२हाकिंभरुचकुनःमसिनिव्यंनसर्वचकुनमसिहृत्॥
 १ ॥ लुमलननिष्प्रीमहावध॥ ध्रु ॥ नमामिहवचचनावर्त्त
 पापनासयदृष्टेहानयःवधपदंवलदहिम॥ २ ॥ नमः२मनकपु
 नसचःनयंनुमाकिथियाचिना२नरुमपिलंदानपुचिकयचमकुनपुचं

लुमलननिष्प्रीमहावध॥

३ ॥ जगदयाचिरुध्यानमूर्तिःकनंकवर्त्तुपुतास्वना२चकुचमाच
 मपुमूषःपचिदृगवोधिदृकुनचैरिहृत्॥ ४ ॥ उरुचमूषकचनयन
 मृगतिकःधाचदृदृहिनादिना२विवीधिनचमःमन्यगहयकृत्तःकु
 किस्फपचाकिता॥ ५ ॥ विवीधीरुनमःमृनगङ्गाताःकृपथकृगकि
 विचासि२हानपुचिकमाकुदंभीरःमृकियदंवददायकं॥ ७ ॥ वसे
 वधुचसन्पालवदृलमार्गभीचसिहयकुन॥ दधमितिथीःकंरुवाच
 संयुक्तवधदधनमंगला॥ ८ ॥ वरुंचार्यरुकुनार्तःचचिकनवहृकि
 मालिका२गीरुयचचिदधनरुचकृत्तःविवीधिरुकिपुपुकिता
 ॐकिंभीमाहावधगीनसमाफः॥ १० ॥ ॐनमा॥ उगुनाचादवो॥ ७ ॥
 जगदरुननिःमृदिमाका॥ मिसंहाचपाचशि॥ सहभुलानूरुगुका

जगदरुननिः

भिन्नः शुक्लसूक्तचूयिनि ॥ १ ॥ चक्रकिन्नमासुत्पत्तिः निलसा
 दोनमासुत्पत्तिः ॥ वक्रकिन्नमासुत्पत्तिः ॥ उगुताचानमासुत्पत्तिः ॥ २ ॥
 वक्रकिन्नमासुत्पत्तिः ॥ चक्रकिन्नमासुत्पत्तिः ॥ निलसादानमासुत्पत्तिः
 उगुताचानमासुत्पत्तिः ॥ ३ ॥ कालाशालिककवन्धसमुत्पत्तिः चक्रयन्त्रम
 धारिणः ॥ मयूतचवगसशगिनिः लोकपालगनसहिर्ग ॥ ४ ॥ उगु
 न्यधुन्यधनिदविः कर्किकपालकाचमि ॥ उल्लङ्घिमिमनिः कयचनि
 मनिः कयुनंमनिरुम्भनि ॥ ५ ॥ व्याधुर्मिहृदकवकालदाकिनीगन
 सहिर्ग ॥ निलयद्वयधुर्गः धचिदकिनिधुचदमचवाकनि ॥ ६ ॥ म
 यूतचवगसशगिनिः सहिर्गः उगुताचानमासुत्पत्तिः ॥ वक्रहचिहच ॥ ७ ॥ म
 निरुनः ककुकिन्नचसहिर्ग ॥ ८ ॥ ननावर्गचयधचिदविः हेसिच

४०

मयचिहच ॥ हातसहिर्गमडमालाचलमालहविगा ॥ ९ ॥ मयचि
 नचिन्ननोः मयचिवाधीकः विकथनिर्वोसीनी ॥ सकलसंमालः कचुनि
 माताः कगनसंसाचउधचनि ॥ १० ॥ कंकमचदनधुगधधयदिय
 नेयरागाचकि ॥ कयनासमडावर्गध ॥ ११ ॥ दुरुचामलसहिर्ग ॥ १२ ॥
 ॐ किन्निवर्गशगिनिनाममाकुसमाफ ॥ ० ॥ ॐ नमास्वयंरुवनम ॥
 रगापदपर्वकसंहाकमूर्तिः पंचवधपंचहानसचूर्य ॥ कानिमयंकच
 नमयचूर्य ॥ १ ॥ स्वयंरुनाथनेपालकमले ॥ २ ॥ चडसवे
 मयूतः सुयंरुनं ॥ हानेधुवधिनवाधिससर्व ॥ पालधुवधिरुनाथस
 सहिर्गः स्वयंरुनाथ ॥ १ ॥ वक्राविधुचदमहसदवः ॥ २ ॥
 कसयक ॥ वाचनगरसंवायगिनाकुसंवाधिनपादः स्वयंरुनाथ

१००
 १००
 १००

॥ २ ॥ सर्वे नमो गणेशाय नमः ॥ हि हि हि हि नि ही पूजितया
 द ॥ नमि सर्वदि नमानु नमः स्वयं नमः ॥ ३ ॥ दाचिदहः स्वा
 दिना भक्त कर्ताः नाचक उच्यमाना उ सदा ॥ मार्ग भुद भक्त वाधी नः
 नाथः स्वयं नमः ॥ ४ ॥ ॥ निधी स्वयं नमः स्वयं नमः ॥ ० ॥
 ॥ ॐ नमो भवधाय ॥ ॥ मधुगं नमः नमो वल्लभ नमः सिंह मासनः किन
 नमः भुव नमः ॥ १ ॥ नमो नमः ॥ पंचकिन वापिनाः नमः नमः ॥ स
 वं नमः ॥ २ ॥ पूर्व दीगं थी नमः ॥ ३ ॥ दकिना देगं थी नमः ॥ ४ ॥ पक्षी मदि
 गी नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥

ॐ नमो भवधाय ॥ ॥ मधुगं नमः नमो वल्लभ नमः सिंह मासनः किन
 नमः भुव नमः ॥ १ ॥ नमो नमः ॥ पंचकिन वापिनाः नमः नमः ॥ स
 वं नमः ॥ २ ॥ पूर्व दीगं थी नमः ॥ ३ ॥ दकिना देगं थी नमः ॥ ४ ॥ पक्षी मदि
 गी नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥

उरुचिदगस्तिकः थी नमो भवधाय ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 वरुः नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 नः थी धर्म भक्तुः नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 ॥ ॐ नमो भवधाय ॥ ॥ नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 जिद भवधायिः दवपाद नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 पुनमासिः महा वृषः पुनमासिः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 वरुः नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 निमालुक्तं देव पातालः किर्ति नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥
 वरुः भुक्तुः पुनमासिः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥

ॐ नमो भवधाय ॥ ॥ नमः ॥ १ ॥ नमः ॥ २ ॥ नमः ॥ ३ ॥ नमः ॥ ४ ॥ नमः ॥ ५ ॥ नमः ॥ ६ ॥ नमः ॥ ७ ॥ नमः ॥ ८ ॥ नमः ॥ ९ ॥ नमः ॥ १० ॥ नमः ॥

[illegible]

सर्वलक्ष्मिपदं ॥ १३ ॥ भक्तज्ञानीचिन्तितानि सर्वइष्टवस्तु ककुमि
नरत्नं कनकरूपसर्वकार्यसिद्धिपदं ॥ १४ ॥ धर्महर्मिसिद्धिगु
हाः वृथैव न मनो हयं २ हं सर्वभूतानामुद्धानां गुरुगणनामामुक्तं ॥ १५ ॥
॥ जिनं नमो महासप्तः द्वाविंशतिरुचिनामनं २ भुवचं न्यः हल्लकार्यः
विमलामलनामनं ॥ १६ ॥ गंधधूपः पुष्पादिपुष्पनायपुष्पादिका २
द्वयः ॥ अथ पुष्पादिनाः लोहनायनसामुक्तं ॥ १७ ॥ महासूनिः
भुवनं नः वांछीनाथुं हल्लकार्यं २ जिनगुणभुवनं स्याः साकुमार्यं
संप्रापदं ॥ १८ ॥ नृद्विजगत्पुरुषः वाधिस्तत्पदजनं २ भवम
पुलसं विदुः श्रीः वर्जसत्वनमामुक्तं ॥ १९ ॥ गृहद्वयं उच्यते च धर्म
सकलिनं वाचनं २ चैव तथापि नः पापरात्रिं नमो देवमाकुपदं ॥ २० ॥

धर्मपुत्रे सर्वहृन्ः देहपिकापुत्रः कार्यानां चार्थः सफसागच
 मुक्तिर्द॥ २१ ॥ **कान्तसुखं चैव गुणं पापं च धर्मं विदेकं यथामार्गं**
चैव कसर्वपापविदा चरन् ॥ २२ ॥ मुखं होचिमाया कालः धर्मवाक्य
 शुभेति ॥ २३ ॥ **नमो गणेशाय ध्यायन् मुक्तिपदं पापकं ॥ २३ ॥** धर्मचैव
 सागवन्ः ब्रह्मधर्मसंघर्षं द॥ २४ ॥ **पूर्वजन्म कलुषार्थः सर्वानन्दरुद्धं च**
 ॥ २५ ॥ **हृदि मुक्तिं चिन्तयन् मुक्तायै धर्ममाचनं नरसंघं च**
 किं विवसनाग जायमलपुत्रं ॥ २६ ॥ **ॐ नमो भूतेश्वराय दिव्यगिरि समापः ॥**
ॐ नमो भूतेश्वराय ॥ ॥ कसल कलिलेन क्वादि उहवः स्वयं हसन् सत्पुलः पि
नसायं हर्षं सर्वदेवगनसिलोमालि ॥ १ ॥ नमो मे २ श्री स्वयं चैव
मुक्तिपदं वलेदायकं ॥ २ ॥ **नमो भूतेश्वराय नमो भूतेश्वराय ॥ पुन्यकाये**

६३

ॐ नमो भूतेश्वराय
 ॐ नमो भूतेश्वराय
 ॐ नमो भूतेश्वराय

श्री धर्मधनुर्वागिध्वजः समचनपापहचय ॥ ३ ॥ **क्वादि क्वं वसं**
पुत्रः देवस्तनत्रिंकी सकोटिदेवसंपूर्ण ॥ देवाच यदचिदना सभापापह
चरन् ॥ ४ ॥ **गुरुवनवापि कथीयं च मनिल ॥ रुग्ण २ धर्मचरु कचना**
मय सर्वं गगतचक्रसादा ॥ १ ॥ **श्रीवृद्धसवलकवल्लभं गुरुवन**
जानि ॥ कच सभयमुक्तिपदं वलेदायकं ॥ ५ ॥ **नवचैव कसिलेन**
माश्रीवृद्धसथाचविसुधी ॥ मत्पुलकचहचक्रवाद्य ६ ॥ **उभयपाचि**
संपूर्ण ॥ १ ॥ **शुवर्णं शुभं हृदयं कृपायय्यधूपदिपः ॥ कलि**
कयं किराकना कोटीपापनासन ॥ ८ ॥ **नमो भूतेश्वराय नमो भूतेश्वराय**
हल ॥ **रार्गुनकद्रपकसमिधिरुहसंपूर्ण ॥ माय जा योग ॥ ९ ॥**
ॐ नमो भूतेश्वराय दिव्यगिरि समापः ॥ ० ॥ ॐ नमो भूतेश्वराय ॥ ० ॥

[illegible]

क य ऊ षी च दु स ख च कि र्थ स ह तान् वा च ता या तु र्ग स हि क च तु
 नि स्त वा मि नि न्य न मा मि ॥ ११ ॥ य स थं क म हा पृ थ व वि दु या प
 ना स नः सर्व का म पु भा ऊ च न ग द्दु नि धु ता व किः क र्ति त्वा र्था व ल
 कि त स्त य स्य ब द ना स्त य क्तुं स मा फ ॥ ० ॥ उ न मो लो क ॥ ॥
 यः ॥ ॥ क य य न क म नि मि ना ग सं क व इ कि र्ग कि व या नि क ह च
 सि क व द ना ॥ १ ॥ श्री वृ ग म स्त च क र्थि कि क र्थे ना र्ग ग क र्थ
 क चू का च न ह द या ॥ २ ॥ श्री क र्मि ना र्ग व सि लो ग क ध चि या र्ग
 द ग म च कि गि क व स सि धि ना ॥ ३ ॥ च वि स सि द व पु सा दि न
 दि र्ग र्ग व र्ग र्ग व नु धु र्ग श्री व र्ग म स्त ॥ ४ ॥ ॥ मि धु लो क न
 थ गि क स मा फ ॥ ५ ॥ ॥ उ न मो लो क ॥ ॥ उ न मो लो क ॥ ॥

३२
सप्तम

25

10

51

[illegible]

१३ नमो लोकोनाथाय ॥ सयाकृपानिपापानिकायकाकीचिरुसंचेव ॥
नरसर्वहृदयनाथ ॥ नमो लोकोनाथकी ॥ १ ॥ नयालेदाद ॥ ह
यत्ननाद्विष्टमहोदयः नचददवसह्यायः नकुमा ॥ २ ॥ मयह
मोचपात्रचइष्टवीनावाहलोकिकासुखदृष्टिकचरुवी नकुमा ॥ ३ ॥
यद्यद्युगनसुखः सर्वसत्त्वानुकृपायाः समर्थसिध्यायलाः नकुमा ॥ ४ ॥
॥ संसाध्यापिनाहकः कथपालकनः मयात्वमेवमचनमीकः नकुमा ॥ ५ ॥
॥ सर्वदेवमयस्त्वहि सर्ववृद्धमयकुचा सर्वसिद्धिमयस्त्ववे ॥
नकुमा ॥ ७ ॥ सदाकृपामयात्वेचसदानुकामयाकृमः सदाप्रहाम
यास्त्वही नकुमा ॥ ८ ॥ यनयनकनककर्मननेनदर्यधनकाः न
मदिकुपदगानिः नकुमा ॥ ९ ॥ सत्वावनिनसंज्ञाफायाचरुसर्व

सत्वकः नावत्ससाचकहृत्त्वः **चक्रमा॥ १** ॥ हानिनी हाननचूपासि
 इष्टरिवादिष्टवकाचमः कामिनी कामचूपासि **चक्रमा॥ १०** ॥ पूजनीय
 चेलीकभयमवस्यस्वचूपाकः वचनीयसदात्तहि **चक्रमा॥ ११** ॥ सकि
 वारुकिवाकपिमिदुवाभकुर्दीपीवाः सर्वकुचदयायूकाः **चक्रमा॥ १२** ॥
 लोकनार्थरुगत्तामिरुकिक्कनं सचक्रमाः लीनमामिपूजयाः **चक्रमा॥ १३** ॥
 १३ ॥ ननकइष्टवर्दीमीमिनाकस्तुसंकटः दयायास्तुचलोके
 भामाचिनास्तु **चक्रमा॥ १४** ॥ सर्वदेष्टुसुपकिदरुयकालमसूर्यः
 तुमकचत्तलचकि नचलाकृत् ॥ १५ ॥ **किंशुमायावलोकि**
नचनचक्रकास्तुवक्रास्तुसमाकृष्ट॥ ० ॥ **उनमाधुवधजकिनिदेव**
॥ वदेत्तामानचनविपिललिलेन ॥ नचनवनचकत्तास्तुयदमाहनिव

हाकिजाचसस्यद ॥ वरुमीमिनीविद्याधनिविन्दिरः चूडपकिचिंसचभु
 चगदिन ॥ २ ॥ विदू मगिनकयव्वनकचिकः रुडनदिकलसंगमवल्लि
 के ॥ सूचपदयभकत्तामिलिकः योगीनिकाठिगलचाकलिक ॥ ३ ॥
 कचकिचाहिपिरुवनमधचत्तकृत्ः मनिमसिचमनिवच ॥ नस्मिंस्त्वमि
 हविचाकस्मिधचजनिर्गकालेसाधकहृत्त्वहचत्ता ॥ ४ ॥ **चिनामनिनि**
मिन्दचवल्लेपगिचीवल्लेमधसदाकृत् ननिचय ॥ कचदिवाकचसकचचिल
लिकसहगानचचपगुत्तवल्लिक ॥ ५ ॥ **लम्बिकचाचचिकृत्तचयन**
वलिगदन्मदयाचसमग्न ॥ साचवदनचामाकिरुदहसाधककृत्तपु
काठिकृत्तह ॥ ६ ॥ **सर्ववरुवामचचकधगुत्तचाचनयापिरुनवि**
मृधाकधचकृत्तमविनिर्मितमालेस्तुमालचमनिचविस्तल ॥ ७ ॥

知

सुधर्मवल्लभादि

नामलमाऊकचं॥ कलचालसुमूआचमालजि॥ पु॥ समामिच॥ अमनी॥ १ ॥
 मतिचाऊबलं॥ यचनाथबलं॥ बलबुअविहाचविधकयचं॥ वाचिकाचदिचि
 गधियनिः॥ पुनिधा॥ पुनमामिच॥ अमनी॥ २ ॥ मनिधापुनिचाधिसु
 जांबवलः॥ बलचसमूशालकं॥ धधचं॥ धचानिपनिनिशालबुअतनूः॥ कम्य॥ पु
 नमामिच॥ अमनी॥ ३ ॥ मन्तारुलनापुनिवाधिरुगं॥ गनुशासुचचो
 कविचिधिचिचं॥ नचरुगं॥ तावजीचरुसमकः॥ महं॥ पुनमामिच॥ अमनी॥
 ४ ॥ मतिपूगवचवचमसूकथः॥ कथतापुचदवनिपधचं॥ धचनिपकिध
 विधिपदवगुच॥ पुचरुय॥ पुनमामिच॥ अमनी॥ ५ ॥ मनिमधगकं॥ कच
 नाकिचदं॥ नचरुयोचमाहसमाधिवलं॥ बलविमूसदकटकं॥ सनासुपहच
 पुनमामिच॥ अमनी॥ ६ ॥ मनिमधवलं॥ शालचागहनः॥ हचमीलीधचं॥

क्यादि कं ७

च ग सा हि च व ह मान चा र्याः सि स मि स क च यु नि वा स न चः ह म स च य न न च स
 मू क न नः श्री लो क ना थ ॥ २ ॥ बु भ्रा खं म व हि स चि यु क च पु सि डाः वि षू
 च वे व स न व ल ध र्म न गुः स र्व गु क सि न म न पु ह क व य च ॥ श्री लो क ना थ ॥
 ॥ ३ ॥ वा ध ध य ह क सि व र्ग कः शु र्य न र्य या ग म वा हिः शु र या म क म र्ग
 क षू र ण ध वा र व ह या न वि ना स का चि ॥ श्री लो क ना थ ॥ ४ ॥ का च स
 ता व ह द या स ह ग स च हि वि र्से क लो गु न सा ग च ॥ वि का म मि च त्रः स सि च
 क गु न क प सः श्री लो क ना थ ॥ ५ ॥ व धू का व धू य वि सा च न नु स र्व य शु मि
 कि न का हि कि दि गु ह लाः न प य पा नि वि स लो न म नि नु र्पः श्री लो क ना थ ॥ ६
 ॥ न व व ह न गु सा व क स म थ शि व क द ग पि म य द वा वे र य स स म या नुः या द
 यि य म गु र्धः स र्व म न ऊ म स लु गि जी नी क धू म स ह कि मा ना च न सा न ॥ ७ ॥

५१३

[illegible]

दानवगान्ध

॥ दहा लोकां नाथ ॥ ३ ॥ समुच्चरन् नवकं पुपत्रासुत्वा समस्तानि
 नामसुक्तिपदं ॥ केनिमन्नाविहं सुदाते लोकां नाथ ॥ ४ ॥ यादा
 वननेवचननसमः दन्दरुमानविषमावविचिसमभनं भिरचगुणि
 कालं लोकां नाथ ॥ ५ ॥ यस्यादसमकमवारवक्तिः श्रीरकाकचायैवग
 हपुष्पाः पद्मपुष्पकूलकसमस्त लोकां नाथ ॥ ६ ॥ भुरवावनिवर्षिक मशु
 सत्ववेद्य इहिकस्य नाम कवर्जकल्यः कलाकचायैः युहिनाम कर्तुं लोकां
 नाथ ॥ ७ ॥ एव न कयल्य ॥ पुनमा मसूजासूत्रं वदितयदं पदचापकचं
 कचपद्मधनं धननिगुननायदचं हचनिर्जितविष्वसधचं ॥ ८ ॥
 दूतगारुगना दयचकृत्तव्यः एवगावकायचिगुफकन ॥ कनूनाकनका क
 सिविष्वपदः पदचूरुमरुसमाफयति ॥ ९ ॥ यकिपाचिकलोकास

मरुगनः गनकिन्नचनागनस्तनः गन् किनमालविष्वचसर्ग ॥ मरु
 सत्त्वानिकल्लिगककामकचं ॥ १३ ॥ विरूताविरूताविगकादिनचं
 चरुकिगनाहचिस्त्वयचं चयनत्वमहोदधिपाचकचं कचूत्तकचकाच
 नचरुवलं ॥ १४ ॥ मंगलासुल्य ॥ स्वर्गधारा लोकाधाराः उदिकनय
 दयादवदवाधिनागासुर्वधनो ॥ कसागावहिमगरुलदानाकल्लोका
 थः यस्सुवापुसादाः दक्षचथः ॥ निपाधिनः विज्ञाकमूकधुषीमान् ॥ लो
 कनाथ गचमालिकमककचानिचरुत्तरुचपि ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 याचिलोकिनध्वनस्यमलिकमालासुवस्तुसमाफ ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ नमाधुमरुनाथय ॥ नथवर्जधनो धीमान् इदानीदमकथ
 च ॥ ॥ लोकाविरुपाविलाः गुप्तनादकचिषसच ॥ १ ॥ विवूडयु

नामसुक्तिपदं

चिकाजः पुस्तकमलानन ॥ १ ॥ लालयवर्जवलाः स्वकलसमूहमूह
 ॥ २ ॥ कृकिकचंगप्रमर्षः चतुर्वर्गपानिहि ॥ ३ ॥ दोनदसके
 विनेः वीलविहस्रचिहि ॥ ४ ॥ लालयविस्वकेनः पुस्तकवर्जक
 तिहि ॥ ५ ॥ पायमहाकचुत्तः जगदर्थकचपच ॥ ६ ॥ हस्तुस्रसया
 मर्दिनः कोधविगुहचिहि ॥ ७ ॥ वृषकचकचैनाथः साधुपसकविगुह ॥ ८ ॥
 पुनस्यनाथसंवृद्धः रगवचकचगग ॥ ९ ॥ कलाकलिपुटोरुत्ताः ॥ १० ॥ दुमा ॥ ११ ॥
 हस्तिगोग ॥ १२ ॥ मर्दिथयमसाथयः कचनकपायमविह ॥ १३ ॥ मायाका
 लकिस्वाधिः यथाचकिहवामहं ॥ १४ ॥ कलानयकमगगनाः क
 चकचकसा ॥ १५ ॥ हितायसर्वस्त्वानाः मनुस्तलरुलाफय ॥ १६ ॥
 यकासयचुसंवृद्धः रगवान्सासाकगगुच ॥ १७ ॥ महासमयकत्वहः ॥ १८ ॥

सयविरूपच ॥ १९ ॥ रगवान्छानकायस्यः महास्मीयस्यगिफक ॥ २० ॥
 कौश्रीछानकायस्यः छानमर्किस्यचुव ॥ २१ ॥ गलीचामुदानाथः
 महाथमसमासिवा ॥ २२ ॥ कदिस्वथानकल्यानिः अमसंगीकिमूहमा ॥ २३ ॥
 याकिठेकविनावृद्धः कविथनेचनागगा ॥ २४ ॥ पुस्तकचसंवृद्धः याकाय
 कचनपुन ॥ २५ ॥ मायाकालमाहकंठः याचास्मिचपुगियन ॥ २६ ॥ महावर्ज
 धनाहस्तः चमर्षमचुचिहि ॥ २७ ॥ कर्हचैनाथचयिष्यामिः नि
 यानचदृतासय ॥ २८ ॥ यथा रगवान्महनाथः सर्वसंवृद्धगुहक ॥ २९ ॥
 यकासयचसुत्वानाः कथासयविस्वक ॥ ३० ॥ कस्यचकेसनासाय ॥ ३१ ॥
 नहानय ॥ ३२ ॥ चवमचयगुचुद्धः वर्जपानिकचगग ॥ ३३ ॥ कली
 लिपुकाहताः पुहकायस्थिगोग ॥ ३४ ॥ कचचनहानगथयिदस

कथं वा कस्मिन्निह गवान्ः समं श्रीद्विपुंदाकम॥ निधुमर्याय नास्ति नाः
 स्वर्गिहोसमं र्गदुहा॥ १ ॥ सिद्धं संदस्य लोकानां। मया यदुय स्वध
 न॥ तुल्यं केशसकलेनः चक्रमालालिसासन॥ २ ॥ तुल्यं मायूच
 यत्नाः बुद्ध्यामधुनयागिना॥ पुण्यरुषिगुणश्रीः वर्णानिमहाबल॥ ३ ॥
 साधुवर्तधभाभीमान्ः साधुवर्तणानय॥ यत्नं गहिनाथयः महाक
 चूनयाद्विह॥ ४ ॥ महाथानामसंगतिः पुवितामं यनासनि॥ सैक
 श्रीहानकायस्यः मन्त्रुः शुभं समुद्यत॥ ५ ॥ कक्षाधदस्यामयः
 महं नगुशकाधिप॥ मन्त्रुत्वेमकागमन्ताः कक्षाधरगवानिदि॥ ६ ॥
 पुनिवचनमथैव॥ ७ ॥ कथं वा कस्मिन्निह गवान्ः सकलमलक
 लसह॥ मन्त्रुविद्याधनं कलः व्यवलोक्तकलं य॥ ८ ॥ लाकोलो

[illegible]

हावियू ॥ ३ ॥ महामहमहामोहः मूर्धधासाहसंदन ॥ महामहमहा
 कोध ॥ महकोधविपुलमहान् ॥ ४ ॥ महामहमहालोहः सर्वलोहनिपु
 दन ॥ महकोपामहास्थायीः महाकायोमाहाचक्रि ॥ ५ ॥ महानृपोमहा
 कायोः महावधूमहावयू ॥ महानामामहादलीः महाविपुलमशुल ॥ ६ ॥
 महापुहायुधधलाः महाकुसाकुलधुनि ॥ महायसामहाकिंकिः महागोनि ॥ ७ ॥
 महाशुकि ॥ ८ ॥ महामायाधवाविद्याः महामायाथलाधका ॥ महामाया
 चक्रिचक्राः महामायादुर्गालिक ॥ ९ ॥ महादानं पुनिधुयु ॥ महाश्री
 लधवागुनि ॥ महाऊनिधवाधीजाः महाविर्यपचाकुम ॥ १० ॥ महामा
 नसमाधिस्थाः महापुहासचिचक्र ॥ महावल्लोमहापायः पुनिधीर्हानसा
 गच ॥ १० ॥ महामेडीमयोमयाः महाकाचुसिकोगधि ॥ महापुहामहा

धिमान्ः महापायमहाकृति ॥ ११ ॥ महाशुधिवलायकाः महाविष्ण
 महारुव ॥ महाधिकामहसाध्याः महावल्लयचाकुम ॥ १२ ॥ महारुवा
 डिहंरुकाः महावर्जधवायन ॥ महाकुलामहाचोडाः महारुयरुयंकच ॥ १३ ॥
 महाविशोदमानाथाः महामनुजमागुच ॥ महायानेनयाचदाः महायाने
 नयासक ॥ १४ ॥ वर्जधकुमशुलगमथाचनुदध ॥ १५ ॥ महारु
 वाचनोवृद्धाः महामुनिमहामुनि ॥ महामननयोद्रुकाः महामनुनया
 सक ॥ १६ ॥ दधपालमिर्गोपायाः दधपालमृकोधुय ॥ दधपाल
 मिनाधुधिः दधपालमिनानय ॥ १७ ॥ दधहमिस्त्रोनाथः दधह
 मिपुनिसिक्क ॥ दधहानविधुधवाः दधहानविधुद्रुक् ॥ १८ ॥
 दसांकाचोदसांथाथः मुनिडोदधवलोवीर ॥ दधधवाविस्त्रार्थकलो

३०
 २५
 १५
 ५
 ०
 ५०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

दध्ना कालावसि महान् ॥ ६ ॥ ननादिनीषुयं चात्माः शुद्धात्मा न तथा ॥
 न ॥ रुक्मवादि यथावादिः तथा कानि न नन्यवाक् ॥ ७ ॥ मद्रोयादे
 यवादि चः रुक्मका निवर्त्य स्थित ॥ न चात्मा सिद्धिर्निर्नादः कृतिथि मृग
 हिकन ॥ ८ ॥ सर्वगुणमयगतिः तथा गत मभार्जव ॥ किं न किं नावति ॥
 र्जयः चक्रवर्ति महारत्न ॥ ९ ॥ गनामूया गनावाय्याः गनल्लभ्यग
 लपति वसि ॥ महान् लावा ॥ लाव्याः नननयामहानय ॥ १० ॥ वागिस्व
 वाग्यति वागिः वाचसंति चनं गी ॥ सुयवा सुयवादि चः चर्तुसुयपद
 थक ॥ ११ ॥ सुवर्तिकाहेनागमिः वधुपुत्रकनायक ॥ नानानिर्यानि
 निर्याभाः महारुक्मका नन ॥ १२ ॥ नरहेतीना शुभाहिकः वीरनाग
 किमदिय ॥ ऊमापाका रुमपाकाः श्रीसिद्धि रुक्मका नाविच ॥ १३ ॥ वि

१०
 ५
 ०
 ५०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

शाचननसंपन्नः शुगभा लोकवित्तन ॥ निर्ममा निचहं कालः सुयदायवा
 वस्थित ॥ १२ ॥ संसाचयानकाटिस्थः कनरुक्मथलस्थित ॥ केवल्यह
 ननिमृक्ताः प्रह्लादका विद्याचन ॥ १३ ॥ सधर्माधर्मजातास्वः लोका
 लोककल्लयच ॥ धर्मस्वजाधर्मजाताः ॥ शुभामा र्ग्यपदसक ॥ १४ ॥
 सिद्धार्थसाधसंकल्यः सर्वसंकल्यवर्जित ॥ निर्विकल्पा ऊयाधुः धर्मधनु
 पनीव्यय ॥ १५ ॥ पुत्रवापुस्वसुतायाः हानहाना कचत्सहन् ॥ हान
 नवाचदधहानिः संतापो द्वयसहन् ॥ १६ ॥ सास्वताविस्वतो शक्तिः
 आनन्दयाधियात्यति ॥ यथात्मवद्यसचनः पचमाद्यनिकायधृक् ॥ १७ ॥
 पंचकायसकीवृधः पंचहानासकीवीर ॥ पंचाव्यात्ममकुटः पंचवक्त्र
 नसंगधृक् ॥ १८ ॥ जनकसर्वव्यानाः वधपुत्रपनीवच ॥ प्रह्लादवर्तक

यानि धर्मयानि र्यात कर्तुः १९ ॥ धनं कसालो वशात्माः सत्यं गाना
 न गतयति ॥ गगनाद्भवस्य रंरः पुद्गाहानानलोत्तमान् २० ॥ विष्णोचन
 माहादिषु ॥ हाननाति विनाचन ॥ गगत्पुष्टिपुद्गाहानोकोः महानंतायुतास्व
 २१ ॥ विशाजाभागुमंरुस्वः मरुजाभा महार्थक ॥ महास्त्रिषोक्तोस्त्रि
 षोः विस्वदष्टिवीयत्यति २२ ॥ सर्ववृद्धात्मनावाग्नाः गगदानदलो
 चन ॥ विस्ववृष्टिविधागावः पूष्मानो महाचिषि २३ ॥ कलंगुयधजा
 मन्तुः महासमयमंरुष्टक ॥ चत्वरुयधजा ॥ पुष्टः म्रियानो रुमदसक २४ ॥
 म्रमाद्यपासविजयीः वर्जपाध्वमहागुह ॥ वर्जकृसासहापा ॥ वर्जसेचक
 रिकच २५ ॥ पुष्टिपुष्टः धर्मधनुहानगमथापंचवीर्यसक्ति ॥ २६ ॥
 कोधचाटवस्त्रमिमः सद्गुणो सद्गुणो वलि ॥ दुष्टोकाचलकंकालः ह

लाहलसगानन ॥ १ ॥ यत्मानकौविद्युजागोःवर्जवर्गवर्गकच
विद्युवर्जवर्जवर्गोःमायावर्गमहोदय ॥ २ ॥ कलिस्यस्ववर्गशिगि
वर्गमंदानकायस ॥ लचलेकगदादापाःगगचर्मपुनाथधिक ॥ ३ ॥ हा
हाकाभामहाधापाःहहंकाभीरयानक ॥ लस्यहास्वमहाहास्वःवर्जहा
स्वमहावल ॥ ४ ॥ वर्जसस्वमहास्वःवर्जनागोमहास्व ॥ वर्जचक्षुम
हामादाःवर्जहंकाचहंकागि ॥ ५ ॥ वर्जवानाकूधधलीःवर्जवर्जानिक
कन ॥ विस्ववर्जधोवर्जिःयकवर्जीवनंरह ॥ ६ ॥ वर्जकालाकनाचा
जाःवर्जकालाभिभीचह ॥ वर्जीवस्वमहावस्वःसुताओवर्जलीचन ॥
७ ॥ वर्जभोमांकलंगमःवर्जभोभकविग्रह ॥ वर्जकोटिनषाचलाःवर्ज
मालाघनंरुवि ॥ ८ ॥ वर्जमालाधोभीमानःवर्जरुचनरुषिक

हा हां वहा सुनिपाथाः वरुधो धाखद ऊच ॥ २ ॥ मरुधा धामहानादः कु
 के कचवी स हान ॥ काका सधनुयर्थनः धावी धावमनी वल ॥ १० ॥ काद
 धनहाग धाया दोन साधदस ॥ ११ ॥ नथ नीरु न नीचात्माः रुत कोटि
 चन ऊच ॥ धुन्य नावादि वीवताः गति धावा च गहन ॥ १ ॥ धर्म सधामहा
 सद्यः धर्म गदिसहाचन ॥ मयु निधि गति वीनाः दधदिग्धमइ दधि ॥ २ ॥ गत
 नन पाचपक नागवः नाना च धामनी मय ॥ सर्व च पावता सुधीः च स्पेय प्रवि
 वधूक ॥ ३ ॥ मयु ध्यामरु ध्याः ने धागुक मरु सच ॥ समुद्रि नाय मार्ग
 स्थाः धर्म के नु महा दय ॥ ४ ॥ धुलो ध्यक क मा जीगः स्थ वि नी वृ धं य नाय
 कि ॥ हा किं सल ऊच ध लाः काना न ला व धुदन ॥ ५ ॥ लोक हाना गुण
 चार्थाः लाका चार्था विसा च द ॥ नाथ कुं ना डि ला का फः स च न नानि चू

च ॥ ७ ॥ गगनी गग से गगः सर्व ह हान साग च ॥ न वि शि ध का सं रु ग्नाः
 रुव पं र च दा च न ॥ ८ ॥ समि ना स्य व सं रु सः सं सा च न जी पा च ग ॥ हाना
 क्रिय क म क नः सं म्य कं व इ रु य न ॥ ९ ॥ डि इ रु व इ रु व सं स ग्नः रु
 नानं न कि मु कि ग न ॥ सर्व विल न मी म कः काका स सम नां ग न ॥ १० ॥ सर्व
 क स म ला कि नः रु ध न ध ग कि ग न ॥ सर्व स ल म हाना गः गु न ध्य व च स
 य न ॥ ११ ॥ सर्व वि धि वी नि म काः धा म व र्म नी भुं स्थी न ॥ महा चि ना
 म नि ध लाः सर्व च ल न मी वी न ॥ १२ ॥ महा क ल न चू लि नाः महा रु ड
 य ना रु म ॥ सर्व स लार्थ क रु क लाः हि ने धा स ल व स च ॥ १३ ॥ धु ला धु
 रु क च रु स म यं रु स म यं वि रु ॥ स ल डि य रु व ल रुः वि म कि रु य का वि
 द ॥ १४ ॥ गु नि गु न रु ध र्मा रुः य सं का र्म ग ला द य ॥ सर्व ग मी ग ल्यः

किंकिंल्लिङ्गियञ्चुता ॥ १४ ॥ महासुधा महास्वास्वः महानन्दो महाच
 ॥ सस्त्राचसस्त्रकिंरुकिः युमादधीयसंस्पति ॥ १५ ॥ वचंल्लवचदस्य
 सः सचन्यासचनोक्तम ॥ सहाकृत्याचियुवनाः निष्पसृत्ययञ्चसन ॥ १६ ॥
 सिधिसिधकिंरुटिलाः रुकिमादि कीनीकिमान ॥ पंचाननपंचभिषिः
 पंचचिलकसंवन ॥ १७ ॥ महावृक्षधनोभाजिः वृक्षचानिवृक्षरुस
 ॥ महागणपतयानिष्टः स्त्राथकोल्लग्नमोगुनि ॥ १८ ॥ वृक्षविश्रात्र
 ल्लवृक्षाः वृक्षनिर्यानिमायुवा ॥ मकिमाऊविमाऊल्लग्नः यिमकि
 नगभिवा ॥ १९ ॥ निर्वाननिहृगिष्ठाकिः ल्लयानिर्यानिमागन
 सुखदुःखरक्तनिष्ठाः वंचाग्नमपधिकय ॥ २० ॥ मृगयानूयमाव
 काः निनाशास्वनिचंगन ॥ निस्कलसर्वाल्लव्यापिः शुक्रविग्नमनास

व॥ २१ ॥ अत्र शावित्र शाविमलोः वांरदावा निजात्मय॥ अथ वृद्धावि
वृद्धात्माः सर्वह सर्ववीर्यन॥ २२ ॥ विह्वानधर्मनकिभाः ह्वानम
ह्वयचूषक॥ निवीकलो निजात्मगः सुधर्मवधकायधृक्॥ २३
अनादिनीधेनावृद्धाः अादिवृद्धा निजात्मय॥ ह्वानेकचक्रनामलोः ह्व
नमृत्तिनथागन॥ २४ ॥ वागिस्त्रनामहावादिः वादिजावादिपंगव॥ व
चनावनाव॥ अथ वादिमिहापनाकिना॥ २५ ॥ समस्तदसिप्राभायः
नका मालिसूदर्शन॥ श्रीवक्तृससृष्टादिष्टिः शास्त्रस्वचक्रचक्रि॥ २६
महाहिसवच॥ अथ सत्यह्वानिचक्रन॥ अथ स्वयं वक्तृनृः कृतव्या
धिसहाचिप॥ २७ ॥ अथ लीलाकिलकंकाकः श्रीमान्नेष्टुमनुल॥ दधदि
गवमपर्याकः धर्मध्वानमहादय॥ २८ ॥ जगद्वक्तृविपूलाः मेजिक

च नमो लयाय नमः ॥ यद्वा नमः स्वयं श्रीमान् च तद्वा नमः सह विरु ॥ २९ ॥ सर्ववृद्धम
हाचारः सर्ववृद्धमहावृद्धक ॥ सर्ववृद्धमहाकायाः सर्ववृद्धकसासन ॥ ३०
वर्जित्वा हि यकधीः सर्वनस्त्रधोपस्वन ॥ सर्वलोक्स्वनपतिः सर्ववर्गा
धियस्वन ॥ ३१ ॥ सर्ववृद्धमहाचिह्नः सर्ववृद्धमनोगति ॥ सर्ववृद्धमहा
कायः सर्ववृद्धसनस्वकि ॥ ३२ ॥ वर्जित्वा हि महालोकः वर्जित्वा हि महालोकः
विनागदिमहाचारः विस्ववृद्धलपुत्र ॥ ३३ ॥ सर्ववृद्धवर्जित्वा हि
वृद्धसंगीतिधर्मवृद्ध ॥ वृद्धपद्मवृद्धश्रीमान् सर्ववृद्धनकायवृद्ध ॥ ३४ ॥
विस्वसायाधनीनागाः वृद्धविश्वधीमान् ॥ वर्जित्वा हि महामहाध्याः विस्वधपन
साजन ॥ ३५ ॥ हृष्टवृद्धमहायानः वर्जित्वा हि महामहायुध ॥ किर्तिनामिह
वर्जित्वा हि महामहायुध ॥ ३६ ॥ सर्वपालमिनायुधिः सर्ववृद्ध

मिविरूषन॥विशुद्धधर्मेनात्माःसंयक्कं हानद्रुहण्युक्त॥ ३१ ॥मा
यां गालमहायोगः सर्वकुंक्षुधिपपच॥सर्ववर्गपर्यक्षाः निरुपहसनका
यधृक्॥ ३८ ॥समनुहडसमजीः किंतीगर्लंगगधृक्॥सर्ववृक्षम
हागर्लः विस्निर्मानचकधृक्॥ ३९ ॥सर्वतावस्वतावागः सर्वताव
स्वतावधृक्॥अनूत्यादधर्मवीस्वार्थः सर्वधर्मस्वतावधृक्॥ ४० ॥धृक्
ऊंमहाप्राहूः सर्वधर्माववोधधृक्॥सर्वधर्माहीसमशीः रूनीनमूनिचगु
धि॥ ४१ ॥सिमिनभुपुसंनात्माः संयक्कंवृक्षवाधिधृक्॥युक्तुसर्व
वृक्षानाः हानाचिसुपुतास्वच॥ ४२ ॥युक्तुयवनाहानगार्थादाच
यधिधृक्॥ ४३ ॥४४॥सार्थसाधकपलः सर्वपायविशोधक॥सर्वस्व
समानाथः सर्वस्वपुमीचक॥ १ ॥कंससंगमसूचकः अहाननि

पदपेहा ॥ विष्णुमन्त्रधनश्रीमान्ः विलविहस्रचूपधृक् ॥ २ ॥ वा
 हृदयसनाकयः पदनिर्जयदस्रस ॥ श्रीमच्छुभुगुगोः गगनीना
 गनंनन ॥ ३ ॥ चकपादनचाकाः महिमलुल्लुल्लिस्थिना ॥ उवा
 बुभिवनांकाः पादागुणनर्वशीका ॥ ४ ॥ चकार्योदायधर्मार्थः
 पचमार्थवीनस्वच ॥ नानाविहृष्टिचपार्थः चिल्विहृष्टानसंनकि ॥ ५ ॥
 म्मपहावार्थचमिः धुन्यनानमिचगुधि ॥ एवनाचघनिकंशुः एव
 कयमहाचकि ॥ ६ ॥ शुद्धशुभाशुधवलः सचचुधुधूपम ॥
 वालाकांमलुल्लुष्टाः महानागनवपुः ॥ ७ ॥ दुनिलाग
 सञ्चिलाः महानिलकवागधि ॥ महामनिमयवधुः र्धनिर्वानरुष
 न ॥ ८ ॥ लोकधनुसनाकैयः अविपादयचाक्रम ॥ महासृनिध

चरुत्वः चर्तुस्मीनिसमाधीनान् ॥ ९ ॥ वीधंगकसुसामादः गथा
 गनगुनादधि ॥ म्मसोगमार्गनयविः संम्यसंवेदमार्गवीन् ॥ १० ॥
 सर्वसत्त्वमहासृग्मः निरुग्वगगनायम ॥ सर्वसत्त्वमनीरुः सर्वसत्त्वम
 भीरुव ॥ ११ ॥ सर्वसत्त्वदियार्थहृः सर्वसत्त्वमनीहच ॥ पंचस्कंधा
 थरुत्वहृः पंचस्कंधविधुधधृक् ॥ १२ ॥ सर्वनिर्यानकाटिः सर्व
 निर्यानकाविद ॥ सर्वनीर्यानमागस्थः सर्वनीर्यानदधक ॥ १३ ॥
 द्वादसाकागर्वायाकाः द्वादधचधुधधृक् ॥ चर्तुसत्त्वनाकाचः म्मसृहा
 नावधोधधृक् ॥ १४ ॥ द्वादसांकाचसागार्थः द्वादसांकाचमत्तविन
 विसृत्ताकाचसंवाधिः विवृद्धसर्ववीत्यच ॥ १५ ॥ म्ममयवधनिमोनः
 कायकाटिविहावक ॥ सर्वजनाहिसमयः सर्वजीरुजनाथवीन् ॥ १६ ॥

नाना यानेन या पापः तद्गदर्थवीहावक ॥ यानीहिययनीयायः ॥ कयानहले
 स्थित ॥ १५ ॥ सुसुधागुविशुद्धात्माः कर्मधागुजयंकन ॥ अखीदधिस
 मरिहः यागकोनाचनिकच ॥ १६ ॥ सुसुधागुससंकुसः सुसुहिनं
 सुवासन ॥ उहापायमहाकुचः त्रमायनगदर्थकृत् ॥ १७ ॥ सर्व
 सहासुहिनाथः विहानाथनीयाधधृक् ॥ सर्वसत्त्वमनाविषयः सर्वस
 त्वमनागति ॥ २० ॥ सर्वसत्त्वमनागस्थः तच्चिकचमनांगन ॥ सर्वस
 त्वमनाह्लादिः सर्वसत्त्वमनाचकि ॥ २१ ॥ सिद्धाभाविशुभापगन
 : सर्वशानाविवर्जित ॥ निसुदिग्धमरिहार्थः सर्वार्थशीगुनात्मक ॥ २२
 ॥ यंचासुंधाथनिकालः सर्वनकुचनविहावक ॥ चककनाहिसुवाधिः
 सर्ववधसहावधक ॥ २३ ॥ मनकोगयकायागुः कायकोनि

५३

वीहावक ॥ त्रसुधचूपसंदधीः चत्तकेगुमहामुनि ॥ २४ ॥ स
 मसाहानगार्थाचगुर्विभक्ति ॥ २५ ॥ सर्वसर्ववधवाध्याः वधवाधि
 चनुरुच ॥ मनकुचामगुयानीः महामकुचल्लुय ॥ १ ॥ सर्वमगु
 थजनकोः महाविद्वचनंजन ॥ यंचाकुचामहाभुन्यः विद्वभुन्यवदक
 च ॥ २ ॥ सर्वकालनिचाकालः धादसाधिविद्वधक ॥ त्रकल
 कलनानिकः चगुर्थध्यानकोनिधृक् ॥ ३ ॥ सर्वध्यानकलाहिहः स
 माधिकुल्लगुविह ॥ समाधिकायकायागुः सर्वसहागकायच ॥ ४
 ॥ निमीनकायकायागुः वृद्धनिमीनवंसधृक् ॥ दसदिग्धिवनिमीनः
 रुथावर्जगदर्थकृत् ॥ ५ ॥ दवीदिदवडेवडेः सुचदोदानवाधि
 य ॥ त्रमलेडभुनगुचः प्रमथप्रमथस्वन ॥ ६ ॥ उरुनरुवरुका

मयि ओ

नाः चकसास्तुगगुचु ॥ पृथ्वीकदधदिगुलोकः धर्मदानपत्रिम
 हान् ॥ १ ॥ मन्त्रिसंज्ञाहसनधः कचन्धर्ममित्यच ॥ पृथ्वीकदधदिगुलोकः धर्मदानपत्रिम
 नृवातः कुम्भहानाचननह ॥ ८ ॥ मालालिमाचनिसालाः चर्तु
 मालाह्याकक ॥ सर्वमालाचमृगकाः सर्वलोकोकनायक ॥ ९ ॥ ३४
 वंशयुक्ताहिवाशुधुः माननीयधुनित्यच ॥ मन्त्रनीयकमामान्याः न
 मस्तुपचमागुच ॥ १० ॥ ॥ लोकेककमगतिः व्याप्यर्यकविकु
 म ॥ ॥ वीशयस्ययपुः वरिहृषदसुनि ॥ ११ ॥ ॥ वीधिसत्त्वमहास
 त्वः लोकातीनीमहर्धाकध ॥ पृथ्वीकदधदिगुलोकः धर्मदानपत्रिम
 ॥ १२ ॥ ॥ मन्त्रनीयकमामान्याः न
 कांकाः ह्याहनाधीपयच ॥ १३ ॥ ॥ धर्मदानपत्रिम ॥ चर्तुमर्दीध

दसक ॥ ययूपास्यकमागुगनाः निर्यानंनुयययिना ॥ १४ ॥ ॥ पचमार्थ
 विधुधधीः ॥ लोकेककमगतिः व्याप्यर्यकविकु
 धीमर्गावत् ॥ १५ ॥ ॥ लोकेककमगतिः व्याप्यर्यकविकु
 नमस्तुवचदेवतीगुः रूककोटिनमस्तुग ॥ नमस्तुधुन्यागार्हः वृधवा
 धिनमस्तुग ॥ १ ॥ ॥ वृधवागनमस्तुगुः वृधकायनमानम ॥ वृधपिडु
 नमस्तुगुः वृधमोदनमानम ॥ २ ॥ ॥ वृधसिनिनमस्तुगुः वृधहासन
 मानम ॥ वृधवाचनमस्तुगुः वृधहावनमोहाम ॥ ३ ॥ ॥ मन्त्रनीयकमामान्याः न
 सुगुः नमस्तुगुधसंरुव ॥ गगनीरुनमस्तुगुः नमस्तुहानसंरुव ॥ ४ ॥
 मायाकालनमस्तुगुः नमस्तुवृधनागक ॥ नमस्तुसर्वसत्त्वताः हान
 कायनमस्तुगु ॥ १ ॥ ॥ ॥ निपधुन्यागार्हः वृधकायनमानम ॥ वृधपिडु

धर्मो नावः स्वभावविशुद्धवर्जः ॥ नृणां नृणां यत्कृतिः पवित्रधर्मसर्वधर्मा
 यः ॥ इह स्ववर्गथागकः हानकायमंरुषीपविशुद्धिना ॥ सुवादायकः न
 मा सर्ववर्गथागकहृदयहृत्तहृत् ॥ अं ह्रीं कृत्वा न हानमर्हिः हान
 कायवागिस्वः महावाचसर्वधर्मः ॥ गगनामयभुपजीशुधधर्मधनुः
 हानगर्भा ॥ **सुविन्यासः ० ॥** नृथवर्गधनशीमानः हृत्तु
 शोक्तगर्तलि ॥ पुनमनाथसंवर्धः रगवर्गकथागक ॥ १ ॥ सुने
 धुवद्विविधनाथः गुच्छुर्विर्तयानिहि ॥ ससंधकाधनाज्ञानो
 वाचार्थी दीवच ॥ २ ॥ नृनृमादामहनाथः साधुसाधुसुताधिकं ॥
 कर्मास्माकं महनाथः सम्यक्वृद्धताधिक ॥ ३ ॥ नृगकथुसनाथ
 सः विमर्कहृत्कांठीना ॥ सुयोमाग्नीवीशुभयः मायाकालनया

५१

दिन ॥ ४ ॥ गगिनादीनवैपल्यः महार्थरुगदर्थरुग् ॥ वृजाना
 विषयासुवः सम्यक्वृद्धताधिक ॥ १ ॥ ॥ ॥ किउयसंहाचगः
 थापंच ॥ नृार्थमायाकालाः धादससाहशीकामहायोगः रुगक
 याकिसमाधिकालपकलाः रगवानः रथागकः ॥ नृमनहाली
 नृगवनाः मंरुषीहानसत्तस्यः दाययनमाथः नामसंगीकिय
 चिसमाफः ॥ नृः यधर्माहृत्तुपुकाः हर्षिवाचयानिदयोवंवादिम
 हासुन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नृमादयावमिना ॥ दानवलेनसमृग
 नवधं ॥ दानवलेनलिनकानलसिंह ॥ दानवलेनचभुयनीधवृध
 ॥ काचुनकेसपुलीपावेस्त्रीन ॥ १ ॥ शिर्यवलेनसमृगनवधं ॥ शी
 र्यवलेनलिनकानलसिंह ॥ शीर्यवलेनचभुयनीधवृधं ॥ काचुति

नृवर्ग
 धर्म

नृवर्ग
 धर्म

केस्यपुत्रिस्वांगं ॥ २ ॥ जा नीव न्यन समगं वध ॥ जा निव लालि
 गानलसिंह ॥ जा निव लं दृच भुयं नि सा वध ॥ का चूर्ने केस्यपुत्रिस्वांगं
 ॥ ३ ॥ विर्यवलन समगं वध ॥ विर्यवल लालि गानलसिंह ॥ वि
 र्यवलं दृच भुयं नि सा वध ॥ का चूर्ने केस्यपुत्रिस्वांगं ॥ ४ ॥ अन
 वलन समगं वध ॥ अनवल लालि गानलसिंह ॥ अनवलं दृच भुयं
 नि सा वध ॥ का चूर्ने केस्यपुत्रिस्वांगं ॥ ५ ॥ पुद्गावलन समगं व
 ध ॥ पुद्गावल लालि गानलसिंह ॥ पुद्गावलं दृच भुयं नि सा वध ॥ का च
 र्ने केस्यपुत्रिस्वांगं ॥ ६ ॥ ॥ निरुपद्रवा चमिका गिरि समा फः
 ॥ ७ ॥ ॥ नमो श्री वरु सत्ताय ॥ वंदे श्री वरु सत्ते रुवन वचनः सर्ववधं
 वरुः नाना रूपेण जनं ॥ किमिल एव हचनः निवीनं मच सा साः व

माधवमिनीः ॥ निनगु सुकलं म सुलं वर्तु धा नु ॥ सर्वान दं य कच्यं
 पचम भुख महिः दहिना भाऊ हेनु ॥ मरुहान काचकिमी लावर्त सख
 नुः महध का लो किमी वै चि च दु लमि ॥ हानं प्र का सम चि पः ॥ विवि वि
 धी धनः श्री वरु सत्त कमि लां सिल सान सा जी ॥ न स स चि चि चि
 पः न चं ड विद्याः रं पा चि मा र व चि मा र व ना स्व च मि ॥ रं सि च सा धन
 पुया महानी धनं श्री लोक नाथः स रूं च रूं प्र का सु मि ॥ वधं तु लोक ना
 थं भुच वचन मि मू ॥ पाल संसा च धि चः धि चं कं धी रूं सुकल गु नी धिः धर्म
 ना ना धि चि रं ॥ क स मा मह द का लाः कलि कल क म लो का म लो ॥ भाग्य अं
 नः रूं वं दं सा स रूं सिंहः नय च मि ना सिल रूं ॥ सर्व काले न मा मिः ॥ हं व लो
 रूं म व ना थं ॥ कच ना थं न मा मिः ॥ न मा य पा स ना मा ना मा लो क ना थं न मा

[illegible]

सलहमलधुमगलवजस्त ॥ १ ॥ हितोद्गकालवर्जः पशुपतिदमकोः
वर्जधस्तजहस्ताः पितो हारादुराजोः रिपुगणमथनोः टल्किराजोमहेत्माः
अक्षोभ्येत्तकेतुपतिदिनमवल्लेः गंधहस्तिजमाली ॥ तुस्तार ॥ २ ॥ स
द्यंतलोके वधुः गुरागनतिलयोः बोधिचिओस्वित्तः बुधो सारेदुराजो विजि
तजिनगुनोः हेरुकोनिरगंधाः बुधो सारेदुराजो विनीतजिनगुनोः सर्वस
त्वो नृकंशा ॥ नस्तार ॥ ३ ॥ प्रज्ञा च डावतारः तज नूनभक्तितः जानसं
भारभाराः तारिं श्रीमालमालाः सकलभयहरः पितवर्ता वीनेनाः तायुरि
मामर्के वः भाषेन हि पगनेः डा इराजो वनाने ॥ तुस्तार ॥ ४ ॥ गाथा
लिजांगुलिचः पुननहितकराः रवभ्रपाशा कृताशाः काएहि वर्जहस्ता अ
स्तिपरसंधराः धर्मधातेस्वारिचः केयुरिज्ञानकेतुः धीवनहितकराः रव
भ्रपाशा वारिजा तुस्तार ॥ ५ ॥ ॥ वग्गमालाहोर्गवताराः पतितजिन

15

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

